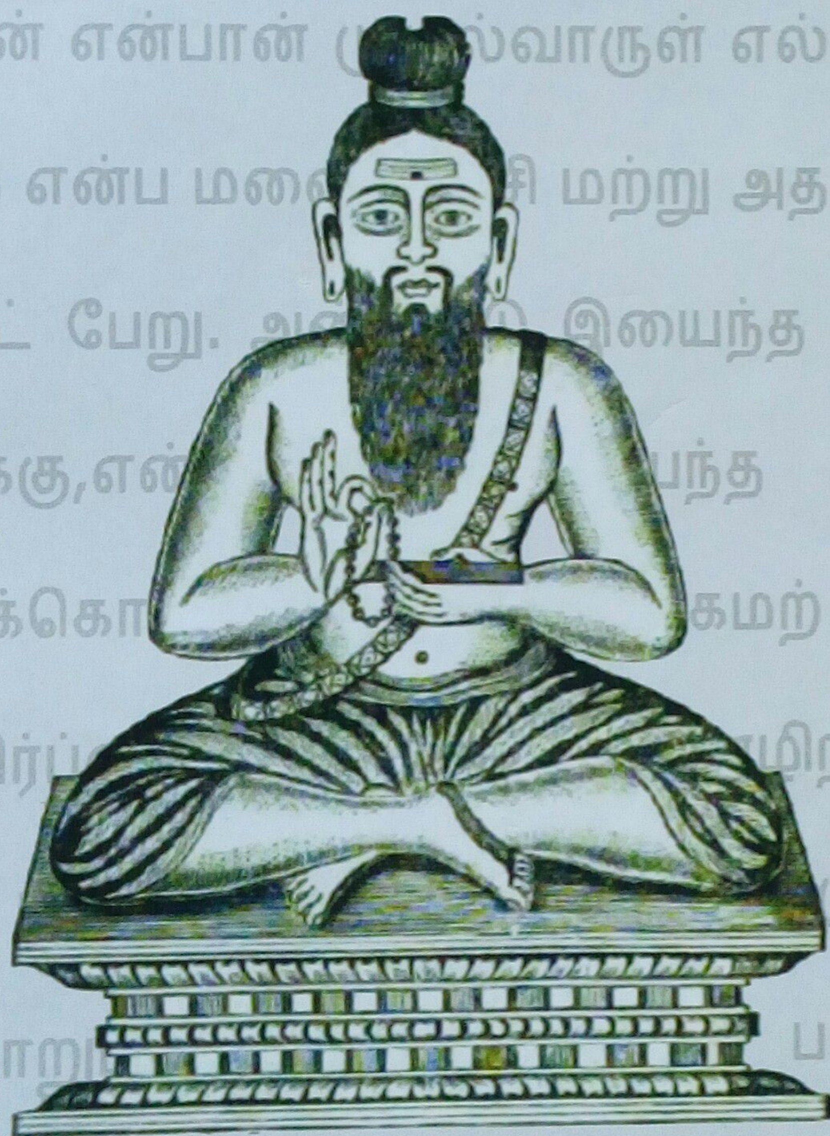
तिरुवल्लुवर

कृत

कुरल

मैथिली भावानुवाद



अनुवाद

कीर्तिनाथ झा

कुरल : मैथिली भावानुवाद

मूल
तमिल-आदिकवि
तिरुवल्लुवर

अनुवादक
कीर्तिनाथ झा

अनुवादक **: कीर्तिनाथ झा**

ISBN : 978-93-5288-940-0

प्रकाशक

Kirti Nath Jha
Mahatma Gandhi Medical College & Research Institute
Pillaiyarkuppam
Pondy-Cuddalore main road
Pondicherry-607403

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य- **भारत मे : ₹ 250 टाका**
विदेश मे : $ **5.00**

आवरण : साभार The Kural of Tiruvalluvar with commentary of Parimelazhagar and simple and clear padavury by The Rev. J. Lazarus, BA, 1885; Madras : KR Press.

मुद्रक- प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

Kural : Maithili Bhavanuvaad (Maithili Translation of Kural, The Great Book of Tiruvalluvar)
Maithili Translation by **Kirti Nath Jha**
Price : IN Rs 250; Overseas $ 5.00

'गुणवति नारि थिकी वरदान
पूत गुणी थिक रत्न समान'
कुरल : 60

श्रीमती रूपम, सुष्मिता एवं **अमिय** केर हेतु

परिचयक दू आखर

'**तिरुक्कुरल**' कवि तिरुवल्लुवरक कालजयी रचना थिक । जीवनक एहन कोनो बिन्दु जाहि पर तिरुवल्लुवरक नजरि नहि गेल होइनि आ जकर चर्चा 'कुरल'मे नहि हो । तेँ 'कुरल'केँ तमिल-वेद कहल जाइछ । ठेठ भाषा, अतुलनीय उपमा, आ ठाहिँ-पठाहिँ उक्तिक कारण कुरल तमिल साहित्यमे अपना-सन अपनहिँ टा अछि । कहबाक काज नहि, अपन विलक्षण कवित्वक आ कुरलक सार्वलौकिक प्रभावक प्रतापेँ अपन एकमात्र कृतिक बलेँ तिरुवल्लुवर अमर छथि । कुरल केर अनुवाद अनेको भाषामे भेल अछि । मुदा, मैथिलीक मुहावरा-लोकोक्ति आ फकड़ाक शैलीमे कुरल केर ई भावानुवाद एकटा प्रयोग थिक । एहि अनुवादक माध्यमे कीर्तिनाथ झा मैथिली आ तमिल साहित्यक बीच एक टा एहन सेतुक निर्माण कयलनि अछि जे पाठककेँ कुरलसँ परिचित तँ करयबे करत, सम्भव अछि ई अनुवाद मिथिलामे तमिल साहित्यक प्रति रुचि सेहो बढ़ाबय । व्यवसायसँ शिक्षक-नेत्र-चिकित्सक आ भारतीय सेना चिकित्सा कोर (Army Medical Corps) केर कर्नल, कवि-कथाकार-अनुवादक कीर्तिनाथ झा 'अग्रतः सकलं शास्त्रं, पृष्ठतः सशरः धनुः' केर उदाहरण छथि । लगभग चारि दशकसँ कीर्तिनाथ झाक कथा, कविता आ लेख मैथिलीक पत्र-पत्रिका सबमे प्रकाशित होइत रहल अछि । हिनक कविता-संग्रह 'जड़ि' (2001), आ कथा-संग्रह 'किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प' (2005) मैथिलीक चर्चित कृति थिक । एहि दूटा मौलिक कृतिक अतिरिक्त, खलील जिब्रान केर अरबी उपन्यास 'The Broken Wings' केर मैथिली अनुवाद 'टूटल पाँखि' (2016) मैथिली साहित्यमे कीर्तिनाथ झाक महत्वपूर्ण योगदान थिक ।

कुरल, तिरुवल्लुवर आ कुरलक मैथिली भावानुवाद

कुरल तमिल भाषाक सबसँ सुपरिचित ग्रन्थ थिक । तमिल वेद छोड़ि आन कोनो विशेषण कुरल ले' समुचित नहि । समाजमे तकर प्रमाणो भेटत । स्कूल-कालेजसँ ल'क' विवाह-जन्मोत्सवक कार्ड आ नेता-अभिनेताक भाषण धरि कुरल केर उद्धरण सब ठाम अभरत । ततबे नहि, तमिल समाजमे देखबैक जे कुरल केर कहबी अनायास ककरो मुँहसँ बहरयतैक आ कुरल केर चर्चा भ' जायत । किन्तु, चर्चा मात्रे ग्रन्थकेँ कालजयी नहि बनबैत छैक । उचित कथा आ सूक्ति समाजक आँखि सेहो खोलैत छैक आ बाट सेहो देखबैत छैक । ठाँहि-पठाँहि उपलक्षणसँ आँखि खोलैवला आ बाट देखबैवला एहने ग्रन्थ थिक कुरल । किन्तु, भाषाक बान्ह कोनो कृतिकेँ अपने समाज धरि सीमित रखने रहैछ । तेँ, ने कुरल मिथिलामे परिचित भेल आ ने विद्यापति पदावली तमिलनाडुमे । अनुवाद एहि बान्हकेँ तोड़ैछ । अनुवादहिक माध्यमे कुरलसँ हमर परिचय एकटा सहज संयोग छल । वर्ष 2000 ई.मे हम बंगलोरक वायुसेना कमान अस्पतालमे रही । ओतहि रोगीक रूपेँ आयल एक विद्वान कुरल केर अंग्रेजी अनुवादक एक प्रति हमरा उपहारस्वरूप द' गेलाह । कुरलक रचयिता तमिल अस्मिताक प्रतीक थिकाह, वा कुरल कालजयी रचना थिक, तहिया हमरा तकर एको रत्ती भान नहि छल । किन्तु, अगिला पन्द्रह वर्षमे कुरलसँ हमर परिचये कुरल केर मैथिली अनुवाद ले' हमरा प्रेरित कयलक । कुरलक मैथिली भावानुवाद एकरे फल थिक ।

कुरल के लिखलनि, वा कुरल कहिया लिखल गेल, ऐतिहासिक वा पुरातात्विक प्रमाणक अभावमे से कहब कठिन । कुरलमे रचयिताक

माता-पिताक नाम, कुल-मूल, जन्मस्थान तँ दूर, कविक नाम धरिक उल्लेख नहि छैक । ग्रन्थकारक रूपेँ परिचित नाम- तिरुवल्लुवर- सेहो एकटा विशेषण थिक । किन्तु, ई विशेषण आब कुरलक रचयिताक हेतु उपयुक्त व्यक्तिवाचक संज्ञा भ' गेल अछि । सत्यतः, कुरल आ तिरुवल्लुवरक सम्बन्धमे जे किछु कहल जाइछ, सबहक आधार जनश्रुति वा कुरले टा थिक, कारण ई रचनाकारक एकमात्र गन्थ थिकनि । जनश्रुतिक अनुसार मद्रासक मयलापुर इलाकाक संत, तिरुवल्लुवर, जातिएँ अस्पृश्य आ व्यवसायसँ जोलहा मानल जाइत छथि । किन्तु, कबीरक काव्यक विपरीत कुरलमे सूत-ताना-बाना-करघा-कपड़ाक चर्चा कतहु नहि भेटत ।

ग्रन्थक रूपमे कुरल केर स्वर मूलतः उपदेशात्मक छैक । प्राचीन भारतीय साहित्यमे उपदेशात्मक ग्रन्थ केर अभाव नहि । अतएव कुरल सेहो पंचतन्त्र-हितोपदेश, नीतिशतकक एकटा कड़ी प्रतीत होइछ । मुदा, ठेठ लोकभाषामे बेजोड़ उदाहरणसँ सूक्ष्म गप्पकेँ ठाँहि-पठाँहि कहबाक एहन शैलीक प्रायः दोसर उदाहरण ताकब असम्भव । तेँ, कुरल अपना-सन अपनहि टा अछि । कुरलमे (मानवीय) धर्म, अर्थ आ काम, सबहक चर्चा छैक, किन्तु दृष्टि समन्वयवादी छैक । तेँ, जैन, हिन्दू, इसाइ आ अनीश्वरवादी, सब कुरलकेँ अपने मतक अनुकूल मानैत छथि । यद्यपि, कुरलमे कोनो मत वा वाद केर चर्च धरि नहि छैक, किन्तु, मानवीय गुण, पुरुषार्थ, अहिंसा आ दान कुरल केर आत्मा थिकैक । तखन कुरल केर एकाधिक उक्तिकेँ कोनो मतक समर्थन बूझी वा नहि से पढ़निहार बूझथु । हँ, कुरलमे ईश-वन्दना आ ईश्वरपर आक्षेप, दुनू छैक । तेँ, तिरुवल्लुवरकेँ ईश्वरभक्त बूझी वा नास्तिक, ई विवेचनाक विषय थिक । तहिना कुरलमे संन्यास आ गार्हस्थ्य दुनूक महिमाक बखान छैक । तथापि, तिरुवल्लुवरक दृष्टिमे गृहस्थक पलड़ा भारी छनि, कारण संन्यासियहुक भरण-पोषणक भार तँ गृहस्थे उठबैत छथि । हँ, कुरल मानुस जनमकेँ अनूप अवश्य कहैत अछि । कारण, प्रेम-सन भाव केर अनुभव वा धर्म-कर्म सब-किछु मनुखेक देह धारणसँ सम्भव होइछ । ई रोचक थिक । तेँ, हम तिरुवल्लुवरकेँ ऊसट्ठ संन्यासी नहि, किछु अंशमे कबीर जकाँ सम्यक् विचारक एहन गृहस्थ संत बुझैत छियनि जे यद्यपि सम्पूर्ण

समाजकें एके लाड़निए लाड़ैत छथि, तथापि सब केओ हिनका अपने बुझैत छनि, आ हिनक समन्वयवादी संहिता सम्पूर्ण तमिल समाजकें अदौ सँ एक सूत्रमे बन्हने अछि । इएह थिक कुरल केर सर्वलौकिकताक प्रमाण ।

कुरल धर्म, अर्थ आ काम नामक तीन खण्ड (पाल)मे विभाजित अछि । ई तीनू खण्ड अनेक अनुखण्ड (इयल)मे वर्गीकृत छैक । एहि सँ नीचाँ प्रत्येक खण्डमे भिन्न-भिन्न शीर्षकसँ 133 टा अध्याय (अधिकारम) छैक । प्रत्येक अध्यायमे दस-दस टा पद (कुरल) छैक । एवंप्रकारें कुल 133 अध्यायक ग्रन्थमे कुल 1330 टा पद छैक । सात सय कुरल सहित, अर्थ नामक दोसर खण्ड कुरल केर सबसँ वृहत् खण्ड थिक, जाहिमे राजनीति, अर्थ आ कूटनीतिक विशद विवेचना भेटत । तथापि, कुरल सबतरि विषय-वस्तुक आरि-धूरक परबाहि नहि करैछ । तें, प्रेम, सद्गुण, दान आ शिक्षा आदिक चर्चा एकाधिक ठाम भेटत । तथापि, कुरलकें कथा आ उपन्यास जकाँ क्रमसँ आद्योपांत पढ़ब आवश्यक नहि । कोनो पन्ना उनटाउ, कोनो पद पढ़ू; रचल-गढ़ल सूक्ति पकवानक ढेर थिकैक । मुँहमे दियौक, तिक्ख, मीठ, नोनगर, कषाय, सबहक अनुभव आ निर्णय अपने करू ।

परम्परासँ तमिलमे कुरल केर गोड़ दसेक अनुवादक चर्चा होइत आयल छैक, जाहिमेसँ कतेक तँ आब अनुपलब्ध छैक । तथापि, सदासँ कुरल तमिल समाजे धरि सीमित छल । समयक बहावक संग उपनिवेशवादी लोकनि भारत अबैत गेलाह तँ सत्रहम-अठारहम शताब्दीमे हिनका लोकनिक संग अबैत क्रिस्चियन मिशनरी लोकनिक नजरि एतूका साहित्यपर पड़लनि । संगहि प्रशासनकें सेहो स्थानीय जनताक मानसिकता बुझबाक बाध्यताक अनुभव भेलैक । अस्तु, सबसँ पहिने क्रिस्चियन मिशनरी लोकनि कुरलक अनुवाद लैटिन, फ्रेंच आ अंग्रेजीमे कयलनि । एहि अनुवाद सबहक माध्यमेसँ कुरल तमिलनाडुसँ बाहर प्रकाशमे आयल । पछाति, कुरलक अनुवाद अनेको भारतीय आ विदेशी भाषामे भेलैक आ कुरलक प्रतिष्ठा देश-दुनिया-भाषा आ भूमि- सबहक सीमा तोड़लक । सर्वविदित अछि, जँ भाषाकें छोड़ियो दी तथापि अनुवाद केर अपन सीमा छैक । अनुवादक

हेतु स्थानीय समाजक आर्थिक संरचना, रीति-रेवाज आ जनसमुदायक मानसिकतासँ परिचय आवश्यक । एकर अतिरिक्त अनुवादकक बोध केर थोड़-बहुत छाया सेहो अनुवादपर अवश्ये पड़ैत छैक । तेँ, एके ग्रंथक भिन्न-भिन्न अनुवादमे एकहि पाठ केर अर्थमे भिन्नता भेटब आश्चर्यजनक नहि । तथापि, कठिन परिश्रमसँ जे केओ कुरलकेँ जतेक धरि बुझि सकलाह, ओकर अनुवाद कयलनि । हमहूँ सैह कयल । एहि काजमे हमरा आप्त सहकर्मी-बन्धु आ उपलब्ध अनुवाद सबसँ सहायता लेबय पड़ल । किन्तु, उक्तिक आत्मा आ काव्यक धुकधुकी बँचल रहैक ताहि हेतु हम सजग अवश्य रही । हँ, मूल ग्रंथक स्वरूप आ हमर भावानुवादमे किछु अंतर छैक । ओ अंतर थिक हमर अनुवादक स्वरूप आ भाषाक सरलता । वस्तुतः अनुवादकेँ हम ने मूल कुरलक 'वेनबा' छंदमे ढारबाक प्रयास कयने छी आ ने संस्कृतनिष्ठ मैथिली काव्यमे । असलमे हमर प्रयास छल जे कुरलकेँ ठेठ मैथिली आ मुहावरा-लोकोक्तिक शैलीमे तेना लीखी जे मूल तमिलक स्वाद आ कविक भाव सभकेँ बुझबायोग्य होइक आ तमिल भाषाक ई अमर ग्रन्थ, हमरे शब्द आ स्वरमे, मैथिलक लोककंठमे तेना रचि-बसि जाय जेना मूल कुरल तमिल लोककण्ठमे बसल अछि । हमर एहि प्रयाससँ कुरल यदि मैथिल जनमानस धरि पहुँचबामे सफल भेल आ कालक्रमे मैथिली कुरल लोककंठमे रचि-बसि गेल तँ हम अपन परिश्रम सफल बूझब ।

पाण्डिचेरी **कीर्तिनाथ झा**

रवि, 29 अक्टूबर 2017

आभार

आदरणीय भीमबाबू (प्रोफेसर भीमनाथ झा)क मुक्त सहयोगक बिना एहि पोथीक प्रकाशन सम्भव नहि होइत । तेँ हुनका प्रति हृदयसँ आभारी छी । एहि अनुवादक पांडुलिपिकेँ पढ़ि अनेक सुझाव देबाले' सुहृद्वर प्रोफेसर श्रीश चौधरीकेँ अनेकशः धन्यवाद दैत छियनि । मुद्रक 'प्रिंटवेल'क संचालक श्री संजू अग्रवाल सेहो हमर आभारक पात्र छथि । अतः हुनको प्रति हमर धन्यवाद आ शुभकामना ।

सूची

प्रथम खण्ड : सद्‌गुण

द्वितीय खण्ड : संपत्ति

I. राज्य

तृतीय खण्ड : काम

I. गन्धर्व-प्रेम



प्रथम खण्ड : सद्गुण

I. प्राक्कथन

1. ईश-वन्दना

1. 'अ' थिक आदि[1], आदि भगवान ।
2. किछुओ सीख नीक नहि थीक
ज्ञाननिधान ईश नहि प्रीति ।
3. प्रभुक चरणकमलक अनुराग
दीर्घ आयु अछि अपने भाग ।
4. निर्गुण ब्रह्म, ज्ञानमे लीन
कहियो कोनो हानि नहि थीक ।
5. नीक, बेजाय, कर्मसँ हानि
हो नहि कतौ ईशकेँ जानि ।
6. जितेन्द्रिय प्रभु पथ अनुराग
दीर्घ आयु हो परम सोहाग ।
7. सहजहिँ प्रभुक चरण नहि प्रीत
चिन्ता-आगि-ताप नहि मुक्ति ।
8. परम पिता पद केर अनुराग
सहजहिँ हो भवसागर पार ।
9. प्रभुक पादपर नबय ने शीश
संज्ञाशून्य, कर्मसँ हीन ।
10. गहल पयर जे प्रभुक उदार
जनम-मरण भवसागर पार ।

---

1. अ वर्णमालाक पहिल अक्षर थिक ।

2. बरखाक विशेषता

11. दै अछि सबतरि जीवन दान
बरखा निश्चय अमृत समान ।

12. भूखलकेँ अन्नक उपहार
जल तँ थिक अपनहिँ आहार ।

13. भले जलधि अछि परम विशाल
बरखा नहि हो पड़य अकाल ।

14. बिनु बरखा बज्जर हो माटि
हऽर-बड़द कनिको नहि आँटि ।

15. रौदी भेने सभक अभाग
बरखा भेने जागय भाग ।

16. बरखा जँ नहि आनय मेघ
घास-पात किछुओ नहि देख ।

17. सागर-सिन्धुक निंघटय कोष
जँ नहि बरखा ओसबय तोष ।

18. जँ रौदी, उपजय नहि अन्न
देव-पितरकेँ कोना सुअन्न ?

19. जँ नहि बारिद देअय पानि
दान-पुण्य सभ किछु केर हानि ।

20. उपटय जीव-जंतु बिनु पानि
बिनु पानिक नहि धर्मक बानि ।

3. साधुक महिमा

21. सकल मार्ग केर एक विधान
संन्यासे थिक मार्ग प्रधान ।
22. भू सँ गेला भेला कत लीन
संतक गुण ततबे अनगीन ।
23. चमकय जगभरि हुनके कीर्ति
पथ संन्यासक, दुहु जग बूझि ।
24. अंकुश बुद्धि सम्हारल पाँच
स्वर्गक बीज जितेन्द्रिय बाट ।
25. इन्द्र देवता स्वर्ग प्रधान
जितेन्द्रियक गुण–बलक प्रमाण ।
26. साधारण ले' असम्भव
महान ले' सम्भव ।
27. ई जग हुनके बूझथि व्याज
स्पर्श दृष्टि घ्राण शब्द स्वादक काज ।
28. साधुए संतक उक्ति
कहबैछ शास्त्र आ सूक्ति ।
29. गुणीजनक कनियोँ किछु राग
पड़त अबस्से, एहन प्रभाव ।
30. गुण केर खान, जीवसँ प्रीति
ब्राह्मण वैह थिकाह विभूति ।

4. सद्‌गुण

31. होय जाहिसँ सकल समृद्धि
थिक सद्‌गुण, हो मुक्तिक सिद्धि ।

32. सद्‌गुण थिक सोभाग
बिसरब थीक अभाग ।

33. जा धरि सकी विभव–अनुसार
जुनि बिसरी समुचित व्यवहार ।

34 स्वच्छ विचार गुणक थिक सार
आर सबहि थिक मिथ्याचार ।

35. वाणी मधुर धर्मक आधार
इरखा लोभ क्रोधेँ परकार ।

36. नित दिन करी सभक उपकार
मरण बेर कयले देत काज ।

37. सुलभ प्रमाण, की करम बखान ?
देखु कहार आ चढ़ल सवार ।

38. नित दिन करी पुण्य केर काज
सद्‌गुण बनबय मुक्तिक मार्ग ।

39. सदाचार सुख केर आधार
आर सबहि किछु थिक बेकार ।

40. सदाचार अबस्से करी
कदाचारसँ दूरे रही ।

II. गृहस्थीक गुण

5. गृहस्थी

41. राजा रंक साधु-सन्यासी
सुतथि निसंक, खटथि घरबासी ।
42. याचक, साधक, मृतक उपाय
गिरहस्थे थिक सभक सहाय ।
43. देव-पितर, परिवार, कुटुम्ब
अतिथि सभहि केर सेवा, धर्म ।
44. धर्म-मार्ग थिक सभक सहाय
वंशवृद्धि केर सरल उपाय ।
45. सबसँ प्रीति उचित व्यवहार
गुण थिक, गिरहस्थिक आधार ।
46. गिरहस्थिक जँ पकड़ी बानि
आर कतहु की पायब जानि ?
47. जीवन केर अछि बहुतो बाट
गिरहस्थी केर भिन्ने ठाठ ।
48. सदति चलथि बिसरथि ने बाट
तप थिक धरब तपस्विक हाथ ।
49. गिरहस्थी पथ परम प्रधान
चूकथि नहि रऽहथि समधान ।
50. पिरथी पर गिरहस्थ, सरंग मे देवता
एके तँ थिका ।

6. पतिव्रता संगिनी

51. चलथि जे अपन ओकातिक बानि
थिकी वैह असली गिरथाइनि ।

52. गृहणी बिनु समुचित व्यवहार
सबटा हुनक बुझू बेकार ।

53. सुलक्षणा किछुओ नहि थोड़
फूहड़ि संग दुखक नहि ओर ।

54. पतिमे निरत रहथि जे नारि
सऽब कथूकेँ लेथि सम्हारि ।

55. पतिकेँ देव बुझथि जे नारि
दुहू लोककेँ लेथि सम्हारि ।

56. गुणवति नारि बचाबथि मान
पति-परिवार सभक सम्मान ।

57. शीलक कोना रक्षा ?
अपने मनक सुरक्षा ।

58. स्वर्गक सुख पाबथि ओ नारि
पतिक प्रीति जँ लेथि सम्हारि ।

59. घरनी गिड़लनि लोकलाज
गिरहस्थक खसलनि पाग ।

60. गुणवति नारि थिकी वरदान
पूत गुणी थिक रत्न समान ।

7. संतान

61. सबसँ नीक, परम वरदान
जँ पाबी संतति मतिमान ।

62. जनम सात नहि कोनो दोष
संतति जँ पाबी निर्दोष ।

63. संतति सकल गुणक जँ खान
संताने थिक अर्थ समान ।

64. नान्हिक हाथेँ सानल
भोजन अमृत मानल ।

65. सुखद परस थिक शिशु केर हाथ
कानक मोद मधुरिया बात ।

66. सुनलनि नहि अधबोलिया बोल
करथि वैह संगीतक खोज ।

67. संगति जँ गुणवानक देल
पिता परम हित पूतक लेल ।

68. बुधिमत पूत पिता केर तोष
जगभरि पसरय अति सन्तोष ।

69. सुयश जनमसँ बेसी नीक
असली सुख संतानक थीक ।

70. पिता-हेतु पूतक थिक दान
'पाओल कोना एहन वरदान' ?

8. प्रेम

71. आँखिक नोर समक्ष
प्रीति करत परतच्छ ।

72. मनमे प्रीति अपने सब थीक
प्रीति बिना अपनहिँ टा नीक ।

73. मानुस जनम देह जँ भेल
प्रीतिक अनुपम अनुभव लेल ।

74. जगसँ प्रीति भक्ति केर मूल
जै सँ उपजय ज्ञानक फूल ।

75. संयम ओ समुचित आचार
सबतरि मोद ज्ञान केर बाट ।

76. कहथि अबूझ : प्रेम गुणिएँ सहाय
प्रेम सुखाबय दुर्गुणोक बेमाय !

77. प्रीति-विहीन गुणी लग दीन
सूर्यक किरण जराबय पीलु ।

78. प्रीति बिना जन जीवनहीन
मरुभूमिक गजुरा सन दीन ।

79. अंतरमे प्रेमक नहि बीज
फूल पलासक गुणसँ हीन ।

80. प्रीति थिकै जीवन केर सार
प्रेम बिना काया थिक भार ।

९. अतिथि-सत्कार

81. अतिथिक आदर करी अशेष
ई गिरहस्थिक परम उदेश ।
82. एसगर नहि अमृतहुक पान
अतिथिक जँ नहि हो सम्मान ।
83. दिन-अनुदिन अतिथिक सम्मान
से कहियो नहि विपति निदान ।
84. अतिथिक सेवा हर्षित मन
सेवक निश्चिय हो सम्पन्न ।
85. अतिथिक सेवेँ पूरय आस
बिना श्रमो केर उपजय चास ।
86. अतिथिक सेवा पुरबय आस
देवलोकमे होअय बास ।
87. आँकब कोना सत्कारक मोल
फलाफल अतिथिएक जोग ।
88. लाभ-हानि थिक ओकरे सोच
जे कहियो नहि सेबय लोक ।
89. परिपूरित भऽ बनी विपन्न
भाग एहन अछि मूर्खे जन ।
90. सुंघिते मुरुझय अनिछम[1] फूल
मूँह मलिन तँ अतिथि हो दूर ।

---

1. अनिछम एक काल्पनिक फूल थिक जे सुंघितहिँ मौला जाइछ ।

10. सहृदयता आ मृदुभाषण

91. सहृदय लोकक मधुरे बोल
स्नेहे सानल अति अनमोल ।

92. मुखपर हास बोलमे लोच
अतिशय मधुर आर की सोच ?

93. स्वागत सहर्ष विपुल वरदान
मीठे बोल बढ़ाबय मान ।

94. सब सङ मधुर वचन जे भाख
चिन्ता दुःख तकर नहि भाग ।

95. मधुर बोल आ नम्र स्वभाव
विपुल रत्न थिक, नहि किछु आर ।

96. समीचीन आ मधुरे बोल
घटबय दोष, बढ़ाबय मोल ।

97. समुचित थिक, गुण गुरुतर भेल
बोल भरोस सादर जँ देल ।

98. मधुर शब्द बढ़बय परितोष
दूहू जग पसरय संतोष ।

99. अपना ले' मधुरे-मधु नीक
बोल चिरैता अनका ठीक ?

100. बाजी मृदु, अप्रिय की काज ?
पाकल फल, ठुरड़ी के चाख ?

11. कृतज्ञता

101. स्वेच्छासँ कयलहुँ जँ दान
आन पुण्य ने तकर समान ।

102. अवसरपर किछुओ सहाय
अतिशय बड़ाइ ।

103. जँ नहि सोची देलहुँ दान
पुण्य तकर हो उदधि समान ।

104. गुनिजन ले' नहि भिन्न प्रकार
तिल नहि, ताड़ मानथि उपकार ।

105. बेसी थोड़ ने दानक परिमाण
के पओलनि ? से भेल प्रमाण ।

106. ने करी सज्जन-सुहृदक अभेला
आ ने टारी बेर परक साहित ।

107. सात जनम धरि गुनिजन मोन
दुखमे मीत जे पोछल नोर ।

108. सुख केर दिन बिसरब नहि ठीक
दुखकेँ बिसरब उचिते थीक ।

109. जँ संयोगे दुख क्यो देल
पहिलुक गुण पुनि मलहम भेल ।

110. सकल पाप केर होय उपाय
कृतघ्नता केर कोन उपाय ?

12. निरपेक्षता

111. राग द्वेष घृणासँ दूर
उत्तम न्याय सबहि समतूल ।

112. निरपेक्षक ऐश्वर्य
नहि निंघटय, युग-युग बढ़य ।

113. कतबो सुलभ पापक कमाइ
प्राण जाय, नहिए टा खाइ ।

114. जीवनक भले अंत भऽ जाय
जाजुगी रहैए नीक-बेजाय ।

115. बूझथि सुख-दुख भागक हाथ
तेँ नहि गुनिजन छोड़थि बाट ।

116. अन्यायक जँ मन मे सोच
सोचथु नाशक निश्चय भोग ।

117. साधनहिनो न्याय-सम्पन्न
कतहु समाज ने कहय विपन्न ।

118. संतुलित हो पुरुष महान
सत्य आचरण तुला समान ।

119. सत्य वचन न्यायमे लीन
सब समान न्यायी तल्लीन ।

120. अनकर धन अपने-सन राखि
सरिपहुँ वित्त व्यापारिक भाखि ।

13. निग्रह

121. निग्रह थिक स्वर्ग केर बाट
अनुशासनहीन सहय अन्हार ।

122. संयम बूझी गुण केर खान
राखि सम्हारी नहि किछु आन ।

123. बुद्धि-विवेके गुणक विकास
क्रम-क्रमसँ हो कीर्त्ति प्रकाश ।

124. गिरिसँ ऊँच शिखर-सन मान
निग्रही होथि स्वयं प्रमाण ।

125. उत्तम विनय सबहु केर संग
श्री थिक विनय धनिक-श्रीमंत ।

126. वशमे करी इन्द्रिय जँ पाँच
सदा सुरक्षा काछु समान ।

127. बाजी सदिखान उचिते बात
अनुचित बात करय अविघात ।

128. भनहि करय कनियेँ उपकार
बोल कटाह सदा सन्ताप ।

129. आगिक दाह, ओल सन बोल
पहिल मेटाय, दोसर ताजीवन बिसबिसाय ।

130. गुण ई देअय समयपर काज
क्रोध-रोध सँ सकल सोहाग ।

14. उचित व्यवहार

131. सदाचार सब गुणक प्रधान
प्राण जाय नहि तजी विधान ।

132. शिक्षा केर अनुपम उपहार
सोचि-विचारि करी व्यवहार ।

133. सदाचारिक के पूछय जाति ?
कदाचार तँ स्वयं अजाति ।

134. कहय पुराण रीति ओ नीति
द्विजो दुराचारी थिक नीच ।

135. दुराचारीक आदर, आ हाहि कटैत मातबरक धन
दुनू असम्भव !

136. दृढ़संकल्प गुणक नहि ओट
सदिखन बूझथि, बिसरब दोष ।

137. सदाचारसँ पाबी आसन
अपवादे थिक सरिपहुँ नाशक ।

138. सदाचारसँ लाभे-लाभ
अनुचित करनी दुःखक भाग ।

139. बाजी नहिए अनुचित बोल
सदाशयक ई गुण अनमोल ।

140. जँ नहि चलथि समाजक बानि
कतबो पढ़थि कुमतिए जानि ।

15. परनारि गमन

141. जनिका सुख सद्गुण केर भार
परनारिक नहि करथि विचार ।

142. पापी धरथि परनारिक द्वारि
मूर्ख एहन नहि मनहि विचारि ।

143. मरण नीक थिक जीवन भार
मित्रक नारिक जँ धरथि द्वारि ।

144. ऐंठाबथि अनकर घर-द्वार
स्वयं केहन छथि करथु विचार ।

145. परगामी ने करथि विचार
जनम भरिक कीनथि उपहास ।

146. परगामीकें भय केर भोग
घृणा-पाप-अपमानक योग ।

147. विशद विवेक गृहस्थक बानि
परनारी नहि मनमे आनि ।

148. परगमन सरिपहुँ निकृष्ट
सुपुरुषक गुण थिक समुचित दृष्टि ।

149. परनारीक धरथि नहि हाथ
जगमे पूजित हो पुरुषार्थ ।

150. परनारीक करी परहेज
पथभ्रष्टहु ले' एतबे शेष ।

16. सहिष्णुता

151. पिरथी सिखबथि करू सहाज
खूनथि, उठबथि तकरो भार ।

152. अतिक्रमण
बिसरी तँ नीक, क्षमा करी तँ ठीक ।

153. आत्मबलक पहिचान : मूर्खक संगतिमे
विभवक परीक्षा, अतिथिक अपमान ।

154. सहनशीलता अपनाउ
सज्जनता बचाउ ।

155. प्रतिशोधक केर कोन मोल
क्षमावान सोलह आना सोन !

156. छनभरि तोष देअय प्रतिशोध
क्षमाशीलकेँ कीर्ति अशेष ।

157. पीड़ा सही भने नोकसान
श्रेय दया जुनि बनी निदान ।

158. अशिष्टताकेँ पछाड़ू
सहनशीलता निमाहू ।

159. अशिष्टसँ सहथि अपमान
एहन पुरुष छथि ऋषि समान ।

160. श्रेयस्कर थिक पड़ब उपास
सबसँ पैघ सहब उपहास ।

17. ईर्ष्या

161. दिन-प्रतिदिन केर बानि बनाउ
इरखाकेँ हियसँ बैलाउ ।

162. इरखा बिसरि होथि मतिमान
पुरुष श्रेष्ठ छथि से अनुमान ।

163. अनकर धऽन देखि कय हाहि
गुणक मानि ने सुखक परबाहि ।

164. जँ बूझी होयत की हानि
करम करी जुनि इरखा मानि ।

165. इरखा सँ नहि आबी बाज
इरखा शत्रुक हो नहि काज ।

166. करथि दान-पुण्यक उपहास
अन्न-वस्त्र ले' कुटुम विलाप ।

167. रुष्ट लक्ष्मी सहजहिँ बाम
ईर्ष्यालु हो विपति निदान ।

168. पितरक पुण्य क्षीण हो अर्थ
ईर्ष्या तँ थिक विकट अनर्थ ।

169. ईर्ष्या केर हानि, सदाचार केर लाभ
सोचबाक थिक ।

170. ईर्ष्यासँ ककरो नहि लाभ
सहृदयतासँ ककरो नहि हानि ।

18. लोभ

171. अतिशय लोभ उजाड़य घऽर
संगहि नोतय अनुचित कर्म ।

172. जे पाबथि समतामे सुखा
लोभक शरण लेथि नहि, दुःख ।

173. क्षणिक आनन्द आ पापक ढेर
परमानन्द आ एहन अन्हेर ?

174. जितेन्द्रिय आ दिव्यद्रष्टा
प्रयोजनो ले' लोभ ? नहि करता !

175. तीक्ष्ण बुद्धि आ विस्तृत ज्ञान
देत ने काज जँ लोभ गछार ।

176. लोभ देखाबय पतनक बाट
भनहि प्रतिष्ठा सकल समाज ।

177. अर्थक हेतु करी जुनि लोभ
लोभक बाटे अगबे क्षोभ ।

178. दोसरक धन, नहि काटी हाहि
अर्थ नाश केर जँ भय समाय ।

179. निर्लोभी गुणवानक द्वारि
लक्ष्मी आबथि स्वयं विचारि ।

180. अतिशय लोभ रोग, हो नाश
संतोषेँ हो चरम विकास ।

19. परनिंदा

181. अवगुण पाप भले नहि नीक
निन्दक नाम नीक नहि थीक ।

182. पीठ पाछु निन्दा आ मुँहपर बड़ाइ
पाप तँ थीके, गुणक उपहास ।

183. मरण भला जँ बाँचय ब्रह्म
मरि नहि जीवी दिऐ कलंक ।

184. भले मूँहपर बाजी बात
पीठ पाछु नहि, हो अविघात ।

185. निन्दक नीच, सोझहिँ चिन्हार
चानन-ठोप की ? हेता देखार ।

186. खसता खाधि जे अपने खूनल
परनिंदक थू-थू नहि सूनल ?

187. हत परिहास, हीन, नहि मीत
हित नहि क्यो, निन्दा जँ लीन ।

188. अनका कहू करत कत हानि ?
हित-मीतहुकेँ दोष बखानि ?

189. पिरथी भार सहथि कर्तव्य
परनिंदक नहि दोषक अन्त ।

190. होयत निश्चय पापक अन्त
तौलि मोनकेँ अनके संग ।

20. गाल बजायब

191. अप्रिय, व्यर्थक बजबाक बाढ़ि
जग भरि दूसय, कहय फचाँड़ि ।

192. अहं नीक नहि हाँकी डींग
चालि नीक नहि अतिशय हीन ।

193. बड़-बड़ बाजब हँऽसत लोक
अपने हयत प्रतिष्ठा लोप ।

194. दस लोकक बिच अनुचित बात
अगबे हयत प्रतिष्ठा घात ।

195. बुधजन जँ बाजथि नहि सोचि
मान हानि हो, आदर थोड़ ।

196. खाली बासन ढन-ढन बाज
खखरी बदि कय बुझय समाज ।

197. अप्रिय भाख भले थिक ठीक
अगबे बाजब नहिएँ नीक ।

198. तौलि भजारथि बाजथि बोल
बुधजन बाजथि भारिगर बोल ।

199. दृष्टि स्वच्छ आ द्रष्टा दूर
कदपि दम्भ नहि गप्प फिजूल ।

200. बाजी नित दिन काजक बात
जुनि अनटोटल सन अभिशाप ।

21. दुष्कर्म

201. सज्जन रहथि, पापसँ दूर
दुर्जन-भय नहि, पापक दुःख ।

202. पापक पेटेँ जनमय पाप
अधिक आगिसँ पापक ताप ।

203. शठ जनसँ शठता केर भाव
सज्जनकेँ नहि एहन स्वभाव ।

204. अनजानहु नहि करियइ हानि
न्यायक डाङ पड़त, ली मानि ।

205. करी बिपतिओमे ने अनीति
नहि तँ सदा बिपतिए थीक ।

206. जानि करी नहि ककरो हानि
बँचब कष्टसँ एक उपाय ।

207. बँचब शत्रुसँ, रही सम्हारि
कर्म अतीतक देत खिहारि ।

208. दुष्टक सोच ने छोड़य संग
नित छाया-सन जोहय संग ।

209. होअय जँ अपना सँ प्रीति
अनकर हानि नीक नहि थीक ।

210. जँ नहि धरी अधर्मक बाट
कहियो नहि होअय अविघात ।

22. सामाजिक दायित्व

211. बरखा ले' नहि किछु माङय मेघ
अपन धर्म नहि किछु लै हेतु !

212. साहित हित दोसरक मतिमान
श्रमसँ संचय मधुक समान ।

213. पायब कतय मानव उत्कृष्ट
दानवीर दानहि संतुष्ट ।

214. सोदर भरि पिरथिक संतान
जे नहि मानथि मुइल समान ।

215. पोखरिक पानि सुलभ सब जीव
दानिक सम्पति सबहक थीक ।

216. वैभव सकल गुणी धनवान
फलसँ लुबुधल तरुक समान ।

217. महामना केर वैभव नीक
कल्पवृक्ष सन निश्चय थीक ।

218. धर्मे बूझि करथि सब काज
साधनहीनहु सेबथि समाज ।

219. सज्जन जन ले' पैघ सजाय
निरुपाय, नहि होथि सहाय ।

220. दान करैत होइ जँ दीन
देहो बेचि होइ नहि खीन ।

23. दान

221. दीन-हीनकेँ देब थिक दान
आर सबहि आदान-प्रदान ।

222. यद्यपि उचित लेब नहि नीक
देब दान धरि उचिते थीक ।

223. याचकक हाक असक-सन भाख
एहन कुलीनक नहि पारिभाष ।

224. याचकक रूप लागय झूर-झमान
दियउ तँ दान, आभा हेतनि चान ।

225. धर्मक काज थिकै उपवास
तै सँ पैघ मेटायब प्यास ।

226. भूखल जनक भरथि जे पेट
धनवानक धन रहय अशेष ।

227. अन्नदानसँ जे नहि चूकय
भूख भय ब्याधि तकरा नहि छूबय ।

228. दानक मरम ओ की बुझता ?
जे लोभेँ अपने कोठी भरता !

229. अपन संचय अपनेटा खाइ
एहिसँ भल भीखे मङनाइ ।

230. गरीब-गुरबाकेँ दी नहि दान
मृत्यु दुखद, ई अधिक निदान ।

24. यश

231. स्वेच्छासँ करी जँ दान
पाबी यश, थिक धनक समान ।

232. दान देने नाम
जग भरिमे सम्मान ।

233. कीर्ति–सन अमर
आ नहि एहन सनगर ।

234. गुणी आ नामी
ईश्वरक प्रिय जानी ।

235. सुयश अमर थिक नश्वर देह
बुधजन करथि कीर्तिसँ स्नेह ।

236. जनम सोकारथ यशहिक लेल
नहि तँ जनम अकारथ गेल ।

237. जनम अकारथ दसक उपहास
कयल अपन दोसरा ले' राग ?

238. यश ने कीर्ति, कथिक सन्तोष
हँसय समाज जगत भरि दोष ।

239. अनाम जिबैत पिरथिक भार
मरने करय उसार पथार ।

240. कीर्तिए थिक जान
नहि तँ मनुख निष्प्राण ।

III. साधु स्वभाव

(i) व्रत

25. दया

241. धन आ बीत तँ छुद्रो पाबय
असली धनवान जे दया देखाबय ।
242. बाट अनेक, सोची आ जाइ
दया करब थिक एक उपाय ।
243. हिय मे राखी दया जोगाय
उत्तम फल केर एक उपाय ।
244. सकल जीव केर बनी सहाय
पापक भय नहि ह्रदय समाय ।
245. पिरथी साक्षी, सरिपहुँ संयोग
दयावानकेँ दुखक ने भोग ।
246. दयाहीन, आ करथि अनीति
बूझथि नहि की समुचित थीक ।
247. निर्धन ले' इहलोक नहि
निर्दय ले' परलोक नहि ।
248. निर्धन भले होथि धनवान
निर्दय सदा रहत पाथर समान ।
249. मूढ़ तँ मनियो लेत उचित बात
पाथर पसिझत ? अजगुत बात !
250. जखनो निर्बलकेँ दबाबी
तँ उद्दण्ड दबंगकेँ मोन पाड़ी ।

26. शाकाहार

251. जीव के खेबइ
आ दयालु कहेबइ ?

252. फूहड़क धन की ?
आ मांसाहारीक दया की ?

253. शिकारी आ मांसाहारी
करबैक गुणक पुछारी !

254. अहिंसा थिक धर्म, हत्या जघन्य
सद्यः थिक पाप मासुक भोजन ।

255. अहिंसा थिक जीवन-सम्मान
मांसाहार थिक नरक समान ।

256. मनुख जँ नहि खायत
तँ मासु किएक बिकायत ?

257. मासु, प्राणिक देहक घाव !
कोनाकऽ खाउ ?

258. खाथि ने बुधजन मर'क भाग
मृत्यु ले' तँ अति सन्ताप ।

259. अरजब सहस्र यज्ञ केर भाग
तजब जँ जीवक संहार ।

260. मांसाहारक करी निषेध
सकल जीव ले' सहज सिनेह ।

27. तप

261. अनका दी दुख नहि, अपने सही
असली तप तँ तकरे कही ।

262. मन पवित्र तँ सरिपहुँ तप
भीतर खोट तँ छल थिक तप ।

263. बहुतो तजथि तपस्या भार
होइ प्रशस्त तपस्विक बाट ।

264. तपस्वी जँ करथि संधान
शत्रुक नाश सुहृदक उत्थान ।

265. कठिन तपक अछि गुण भरपूर
होअय सकल परमारथ पूर ।

266. तप केर बाट ज्ञान धरि जाय
ओझरायल केर कोन उपाय ?

267. आगिक योगेँ चमकय सोन
तपक योगेँ साधक-मोन ।

268. सकल जगत नमाबय शीश
वशमे मनकेँ करथि विभूति ।

269. तपस्याक बल
मरणक कोन डर ?

270. थोड़बे सुखी, दुखी संसार
सहब कठिन तपस्याक भार ।

28. मिथ्याचार

271. अपनो मोनकेँ कोना मनाबी
जँ अपनहिँ अनुचित अपनाबी !

272. आसन उँच आ भीतर चोर
दु:खे-दु:ख विकट संयोग ।

273. साधुक बाना भीतर फोँक
बाघक छाला दुर्बल लोक ।

274. चानन-ठोपक व्यापारी
अऽढ़मे शिकारी ।

275. बाना मनोजित, उलटे बानी
पड़त डाङ तँ 'हाय-हाय' कानी ।

276. छल-प्रपंच मन, बनल विभूति
क्रूर, साधु नहि बचबे नीक ।

277. लाल करजनी कारी नाक
पहिरन गेरुआ सब क्यो जान ।

278. तनकेँ धोअथि, मनमे पाप
मनक अपराध मनहि मन झाँप ।

279. सोझ तीर आ टेढ़-सन बीन
रूप ने देखी काजहि चीन्ह ।

280. जटाजूट नहि, शिर बेलमुंड
करी अनुचित नहि, कोनो ने दंड ।

29. धोखासँ परहेज

281. अपमान सँ डेराय
चोरिक विचारो ने करय ।

282. चोरिक विचार
निषिद्ध आचार ।

283. पापक घैल आ चोरिक धन
पहिने पूरय, अबस्से फूटय ।

284. चोरिक लोभ
क्षोभे–क्षोभ ।

285. चोराबी आ छिपाबी
तँ हिरदयमे माया कतय पाबी !

286. चोरिक लुतुक आ गुण केर योग
दुनू एक सङ नहि संयोग ।

287. अभ्यासे गुणसँ समतूल
सुपुरुष रहथि चोरिसँ दूर ।

288. सुपुरुष होथि गुणक नहि थोड़
चोरि ने छोड़य चोरक पछोड़ ।

289. हरण करब टा जे नर बूझथि
पापक खाधि अबस्से खसथि ।

290. सज्जन चलथि धर्म केर बाट
चोरक भागे अति आघात ।

30. सत्यता

291. जै सँ नहि होइ ककरो हानि
सैह सत्य आ सत्यक बानि ।

292. जँ होइ ककरो उपकार
असत्यो थिक सत्यक प्रकार ।

293. बाजी फूसि फेर पछताइ
एहन फूसि के कोन उपाय ?

294. अन्तःकरण जँ सत्य केर राज
सबदिन पूजय सकल समाज ।

295. विचार आ व्यवहारमे सत्त
तै सँ पैघ ने दान, ने तप ।

296. सुयश कीर्ति केर सहज उपाय
सत्यवचन थिक सरल उपाय ।

297. जँ पकड़ी सत्य केर बानि
आर सबहि गुण निश्चय जानि ।

298. पानि बहाबी तनकेँ धोइ
सत्य भजारय मनकेँ तौलि ।

299. सकल ज्योति नहि असल इजोत
सत्य सुदुक धीमान इजोत ।

300. सबतरि बीछल एक विचार
सर्वोत्तम सत्यक व्यवहार ।

31. क्रोधपर विजय

301. पियब क्रोध थिक सत्त महान
क्रोधे जँ अनकर नोकसान ।

302. एहन आर नहि घातक योग
क्रोध-अहंकारक संयोग ।

303. क्रोध अनर्थक बीज
क्रोध करक नहि थीक ।

304. प्रीति, हास सबकेँ पी जाय
शत्रु एहन की कहू बुझाय ?

305. रही सुरक्षित, मारत घात
क्रोध अचक्के कर अविघात ।

306. आगि लगाबय जीवन भार
क्रोध जराबय संग-समाज ।

307. पीटी पिरथी अपने चोट
क्रोध जोगाबी दुख आ खोट ।

308. उचित करब थिक क्रोध निरोध
भले सही अपमानक बोध ।

309. मनकेँ करथि रोष जँ दूर
हेतनि सकल सेहन्ता पूर ।

310. क्रोध-निरोध थिकै संन्यास
क्रोध देखाबय नाशक बाट ।

32. परपीड़ासँ परहेज

311. अनका दुख हो अप्पन लाभ
सज्जन केर नहि एहन स्वभाव ।

312. शुद्ध हृदय केर अपन विधान
सहथि दु:ख, प्रतिशोध न जान ।

313. अतिशय हानि करय प्रतिशोध
भले सधाबी केहनो रोष ।

314. बिसरी दोष करी उपकार
दुष्टक हेतु यैह प्रतिकार ।

315. एहन भाव केर कोन बखान
दोसरक दु:ख अपन नहि मान ?

316. अपना जै सँ पीड़ा भेल
करब उचित नहि अनका लेल ।

317. ककरो, कतहु ने पीड़ा दी
उत्तम विचार सदातनि छी ।

318. भोगने जँ आघातक बोध
ककरो दुखक किए दी बोझ ।

319. अनका दुख दी अपने पड़य
भोरक करनी साँझे फलय ।

320. दुखदायकके ँ दु:खाक भोग
ने दुख देथि करथि उपभोग ।

33. अहिंसा

321. जान बचाबी बड़का धर्म
हिंसा बूझी परम अधर्म ।

322. सकल शास्त्र केर एक विधान
बाँटि-कुटि खाइ, बचाबी प्राण ।

323. बाजब सत्य गुणक थिक खान
जीवक रक्षा परम प्रधान ।

324. उचित आचार ? होअय जँ प्रश्न
पावन परम अहिंसा पंथ ।

325. साधु मनाबथि घुरि नहि आबी
कते नीक जँ हिंसे बैलाबी !

326. मृत्यु करय सबहक संहार
अहिंसक ले' नहि भयक विचार ।

327. जान जाय बरु अपटी खेत
हिंसा केर संग नहि देब ।

328. कतबो कतहु भेटय बरु लाभ
घृणा करी कसाइक काज ।

329. बूझथि जे व्यवसाइ
निर्घिन कहथि कसाइ ।

330. रोग, दरिद्रा, घृणा केर भोग
जीवहत्या फल भाखय लोक ।

(ii) ज्ञान

34. नश्वर

331. नश्वरकेँ बूझब अमर
थिक दीनता, अज्ञानता ।
332. तमसगीर आ धन
जहिना आबय तहिना जाय ।
333. धन थिक चंचल
नियामिकीमे लगाउ, कीर्ति बढ़ाउ ।
334. दिन थिक लटकल तरुआरि
जीवनपर ।
335. कीर्ति करू बढ़त सम्मान
क्षणिक श्वास केर कोन ठेकान ?
336. दुनियाँ कहत : काल्हि छला
आइ गेला ।
337. भने करी कतेक नियार
अगिला क्षणके कोन ठेकान ?
338. चिड़ै-चुनमुनी आ मनुखक जान
खोँता आ देह क्षण भरिक सिनेह ।
339. मरण आ जनम
नीनक सूतल, जागल उठल ।
340. ठठरीमे प्राण ?
कहियो हेतइ अपन ठेकान ?

35. संन्यास

341. जै सबसँ लेलहुँ संन्यास
तै सँ दुख नहि करत तबाह ।

342. बढ़ू, चलू चाही आनन्द
संन्यासक पथ परमानन्द ।

343. वशमे करी इन्द्रिय पाँच
त्यागी बिसरी कामक आँच ।

344. साधुक शोभा थिक संन्यास
माया-मोह मरीचिका भास ।

345. मोक्षक बाट देहो थिक भार
तखन किएक बढ़ाबी भार ?

346. अहंकार आ ममत्व जे छोड़लनि
स्वर्गहुकेँ जितलनि ।

347. नीक-बेजाय ले' सदिखन बेकल
अपन खुशीकेँ अपने फेकल ।

348. कयलनि त्याग बचौलनि जान
बाँकी भ्रममे, उबडुब प्राण ।

349. जीवन-मरणक जाल अनन्त
छोड़ी मोह तँ होअय अन्त ।

350. मोहे करी, तँ सेवी निर्मोह
तखन फेर कथी केर मोह !

36. सत्यक ज्ञान

351. सत केर भेद, असतसँ मेल
धेलउँ बाट, जनम नहि लेल ।

352. भ्रम–विहीन दृष्टिएँ स्वच्छ
दसो भुवन भोगल परतच्छ ।

353. फाटल धोन, बिलायल भरम
पिरथी दूर, लऽग भेल सरग।

354. ज्ञान केहन ? जँ मर्म नहि बूझय
संज्ञाशून्य, नयन नहि सूझय !

355. रूप अनेक, सबहि थिक एक
ज्ञानी बूझथि दृष्टि विशेष।

356. जनिका भेट सत्यसँ भेल
धेलनि बाट, जनम नहि लेल ।

357. परम सत्य केर दर्शन भेल
पुनर्जन्म केर सुधि नहि भेल ।

358. फाटय तिमिर नयन हो स्वच्छ
असल सत्य देखब परतच्छ ।

359. चीन्हल सबहक एक उपाय
शोक कथी ले', ककर सहाय ?

360. क्रोध, रोष, सब शोकक मूल
ललक हँटय आ दुख निर्मूल ।

37. सेहन्ता

361. घुरि-घुरि आबथि सबटा जीव
काम बीज थिक सब केर सीख ।

362. पुनर्जन्म नहि होअय भाखी
इच्छा त्यागि सोचि मन राखी ।

363. इच्छा त्यागल अनुपम भाग
परलोकोमे यैह सोभाग ।

364. इच्छा-मुक्ति सनक नहि शुद्धि
सत्यक साधन बढ़बय सिद्धि ।

365. थिका मुक्त जे इच्छा त्यागल
बाँकी सब बूझू लपटायल ।

366. इच्छा तँ थिक बड़का चोर
भय जँ राखी सब गुण थोड़ ।

367. इच्छा-दमन करथि जे सिद्ध
पाबथि मोक्ष आ परम प्रसिद्धि ।

368. इच्छा परम दुखक थिक मूल
इच्छा नहि हो, दुख निर्मूल ।

369. दुख केर मूल, काम केर अन्त
सुखक धार नित बहय अनन्त ।

370. दुस्सह भूख काम केर त्याग
परमानन्दक परम सोहाग ।

38. भाग्य

371\. कर्म हानि आलस अति हरजा
दृढ़ता थिकै कर्म केर उपजा ।

372\. उपजय बुद्धि भाग जँ प्रीत
परम अभाग बुद्धि विपरीत ।

373\. पोथी पढ़ी वा गुनी पुराण
अपने बुद्धि विपुल वरदान ।

374\. एहि जग केर दुइए टा रीति
सम्पति, सुमति, कहय ई नीति ।

375\. भाग देखाबय अजगुत खेल
दिन हो दुर्दिन, दुर्दिन शेष ।

376\. नीक आ बेजाय
लिखल बथाय ।

377\. ने एको मिसिया बेसी, ने कम एक राइ
पायब ओतबे, करी लाख चतुराइ ।

378\. भागे मारलक भाँजी, नहि तँ
भिखारिओ होइत संन्यासी ।

379\. भागे भोगी तँ
अभागे किएक कानी ?

380\. भागक दोषकेँ की टारब ?
पुनि भागेक आगू हारब !

द्वितीय खण्ड : संपत्ति

I. राज्य

39. राजाक महत्ता

381. किला अभेद्य, सुहद्, धन-धान्य, मंत्री सुमति, प्रहरी बलवान
प्रजा सहित छौ टा अवदान, नरसिंह रूप नृपति जग जान ।

382. हृदय उदार, भयक नहि लेश
वीर, चारि गुण नृपक, विवेक ।

383. साहस, ज्ञान आ दृढ़ता
गुण राजा केर तीनटा ।

384. अन्यायक करथि नृप शेष
गुणक निधान वीरवर श्रेष्ठ ।

385. अरजथि, पाबथि, संचथि, बाँटथि
चारि गुणक निधि नृप नर भाखथि ।

386. मृदुभाषी आ सब सँ भेट
एहने नृप बूझी नरश्रेष्ठ ।

387. मृदुभाषी नृप चरित उदार
सब-किछु अर्पण करय समाज ।

388. रक्षा करथि न्याय पुनि देथि
ईश्वर रूप प्रजा ले' होथि ।

389. अप्रियो भाष सुनथि भऽ धीर
राखथि राज सुरक्षित वीर ।

390. दया, क्षमा, न्याय आ सोच
एहन नृपति हो स्वयं इजोत ।

40. विद्यार्जन

391. पढ़ी, पढ़क जे, गूनी ज्ञान
जीवन-पद्धति पढ़ल समान ।

392. आखर, अंक कहथि मतिमान
मनुख-हेतु ई आँखि समान ।

393. बुधमतिएटा थिक सरिपहुँ आँखि
नहि तँ टेटर थिक ई मानि ।

394. बुधिमत केर सगंति अति मीठ
छूटय संग बिछोहक पीड़ ।

395. बुधिमत नबथि, ज्ञान ले' ठीक
ठाढ़ ताड़-सन अमरुख नीच ।

396. शास्त्रक मंथन ज्ञानक खानि
बालुक तरे-तर अगबे पानि ।

397. पढ़ी-गुनी अछि जाधरि जीवन
गुणीजनक हो आदर सबतरि ।

398. एक जनममे अरजल ज्ञान
सात जनम धरि धनक समान ।

399. बिलहथि ज्ञान, दसक हो तोष
बुधजन अपनहुँ अति सन्तोष ।

400. विद्याधन नहि निंघटय कोष
धन-संपत्तिक कोन भरोस ?

41. अज्ञानता

401. बैसाड़मे बिनु सोचने बाजब
बिनु बिसातक शतरंज थिक ठानब ।

402. अमरुखक भाषणक व्यापार
काँच कुमारि अबोधक अभिसार ।

403. बुड़िलेलो लागथि बुधियार
गुणी लग जँ राखथि मुँह सम्हारि ।

404. अमरुख केर तुक्का
ज्ञानी कतौ सुनता ?

405. जखने भाषण ठानल
बुड़िलेलक हँटतनि झाँपन ।

406. अज्ञानी आ ऊसर भूमि
अछि, बड़ बेस !

407. रूप सुदर्शन बुधि बुड़िलेल
ढउरल पुतरी रूप विशेष ।

408. पंडित ने सहथि दरिद्राक मारि
अमरुखक सम्पत्ति जतेक झमारि ।

409. जन्मे भले नीच, ज्ञानहि ऊपर
ऊँचकुलक मूर्ख, आ ज्ञानीक परतर ?

410. बुद्धिमान ले' अमरुख
जेना मनुक्ख ले' जानवर ।

42. सुनब

411. धनमे धन सुनब धन
ई धन सब धनमे उत्तम ।

412. जखन बीति गेल सुनबाक बेर
अबस्से किछु खाइ भरै ले' पेट ।

413. ईश स्वर्गमे पाबथि होम
मनुख भूमिपर कानहिँ भोग ।

414. भले निरक्षर, नहि शिक्षाक छूति
सुनू, काज देत, जँ दिन विपरीत ।

415. ज्ञानी पुरुषक सूनी बात
हाथक ठेंगा, जँ पिच्छड़ बाट ।

416. थोड़बो सीखी ज्ञानक बात
जतबो सीखब ततबो काज ।

417. सुनल विशेष गुनल मतिमान
अनुचित कथा बिसरि नहि भान ।

418. ज्ञानक वचन सुनल नहि कान
खुजल कान थिक बहिर समान ।

419. काने सुनल ज्ञानक नहि सीख
बोधक वचन बाजब विपरीत ।

420. जीहक पातर, सुनथि ने कान
जीबथु वा मरथु एहन अकान ।

43. बुद्धि

421. बुद्धि थिक बल : अंतर केर गढ़
दुश्मन नहि नाशय, राखय सबल ।

422. बुद्धि थिक मनक रासि
अवगुण दाबि गुणक दिस साहि ।

423. कहय केओ आ कतहुक सुनल
बुद्धिक गुण थिक सत्यक मंथन ।

424. बुधजन कहथि सरल, हो आदर
अपनहुँ बुझथि सूक्ष्मतर बाजल ।

425. बुधजन सबहिँ निरंतर प्रीति
छनमे बन्न छनहिमे खूजब कमलक रीति ।

426. समाजक संग सवारी
थिक असली बुधियारी ।

427. बुधियार देखथि भबितब
अमरुखक की कहब ?

428. बुडिबके जँ नोकसानसँ नहि डराइ
नोकसानक भये थिक बुधियारक बड़ाइ ।

429. बुधियार आगूक सोचथि
खाधि ने सखथि ।

430. बुद्धिए थिक धन
बुद्धिए नहि तँ केहन धन ?

44. दोष

431. छुद्र बुद्धि, रोष आ अहंकार
एकरा मानथि भलमानुस विकार ।

432. अतिशय लोभ, छनहिमे क्षोम
पक्षपात थिक नृप केर दोष ।

433. अपवादसँ डेराथि
मिसिया भरि दोषकेँ बुझथि तारकुनसँ बेजाय ।

434. चूकसँ बँची जेना बचाबी धन
चूक शत्रु, मारत कोनो छन ।

435. अपन चूक अपनहिँ अवधारि
पुआरक ढेर, लगेमे आगि ।

436. एहन राजाक केहन दोष ?
पहिने सुधारथि जे अपने दोष ।

437. किरपिनक संपत्ति किन्नहु नहि बढ़य
घटबे करय ।

438. किरपिनताइक छार
सबसँ देखार ।

439. अपने मुँह अपन बड़ाइ
बिसरियो ने करी अपन पीठ ठोकाइ ।

440. अपन गुप्त प्रीतिकेँ छपाबी
तँ दुश्मनकेँ छकाबी ।

45. श्रेष्ठक मार्गदर्शन

441. गुनिजन ताकथि बनबथि मित्र
नृपति चिन्हथि परिपक्व-प्रबुद्ध ।

442. बसबथि गुणी बढ़ाबथि मेल
एखन सहायक, आगुओक लेल ।

443. बिरले थिक महानकेँ पायब
मैत्री करब आ निबाहब ।

444. अद्भुत बल थिक हो घनिष्ठ
अपनासँ पैघसँ आ बेसी बलिष्ठ ।

445. मंत्री थिकाह राजाक आँखि
चुनबामे राजा चलथि समधानि ।

446. शत्रु हुनक की लेता बिगाड़ि
सचढ़ हितैषी, चलथि विचारि ।

447. एहन नृपक अहितक नहि लागि
करथि भूल तँ देनि देबाड़ि ।

448. शत्रु ने होअय तैयो शोक
उचित कहय नहि, ककरो रोक ।

449. असंभव, अर्थक बिना लाभ
बुद्धिमान मंत्रीक बिना थिरता ।

450. सुबुद्धिक मन्त्रणाक अनादर
सेनाक एसगरे सामनासँ दसगुण घातक ।

46. कुसंगति

451. लाख गुण, रही छुद्रसँ दूर
छुद्रे हो छुद्रक संगतूर ।

452. माटिए पानि घोर-मट्ठा
आ कुसंगतिए बिगाड़य बुद्धि ।

453. जन्मसँ पाबी आँखि-कान
संगतिए पाबी सम्मान ।

454. मनसँ बुद्धि, बुझय संसार
संगतिए बनी बुधियार ।

455. सद्बुद्धि आ सदाचार
सत्संग सँ उपजय ।

456. सज्जनक वंश, सुशील
आ सत्संगसँ सदाचार ।

457. सद्बुद्धिए उपजय संपत्ति
सत्संगहिसँ यश ।

458. उत्तम बुद्धि थिकै वरदान
सत्संगे बढ़ाबय ज्ञान ।

459. उत्तम बुद्धि स्वर्ग केर बाट
उत्तम संग द्विगुण सौगात ।

460. सत्संगे थिक बड़का योग
कुसंगति सन नहि हो रोग ।

47. सोची आ उठाबी पयर

461. लागत, लाभ आ हानि
पयर बढ़ाबी निश्चय जानि ।

462. करथि मन्त्रणा, सोचथि आगु
सब-किछु सम्भव करथि विचारि ।

463. एहिमे कोन बुधियारी
सूद ले' मूरो गमाबी ।

464. बदनामीसँ डराइ
तेँ बिनु सोचने नहि अगुताइ ।

465. रणमे बिनु सोचने अगुआइ
तँ दुश्मनक हाथे अबस्से पाबी सजाय ।

466. अकर्तव्यसँ होअय नाश
करतब छोड़ने सकल विनाश ।

467. पहिने सोची, साहस पाछु
उनटा केलहुँ नाशे नाश ।

468. कतबो करी चतुराइ
बिनु जोगाड़े खसबे करब खाइ ।

469. असंतुलित योजना भले हो नीक
असफलता निश्चय थीक ।

470. एहन करी नहि होअय हँसाइ
अनवधानक नहि हैत बड़ाइ ।

48. शक्तिक ज्ञान

471. करी युद्ध जँ तौली चारि
शत्रु, मित्र, अपन बुत्ता आ लाभ ।

472. असम्भव किछुओ नहि जानि
सबल, सुमति हो कर्मक ज्ञान ।

473. बुद्धिकेँ त्यागि, लौलपर भागल
अपने पयरपर कुड़हरि मारल ।

474. अहंकार आ सुमतिक अनादर
अपने नाश अपनहिँ बेसाहल ।

475. टूटय धूरी अतिशय भार
मयूरपंख हो भले सवार ।

476. लौले छरपला अगिला डारि
खसला नीचाँ जीवन हारि ।

477. ओकाति देखि करी दान
तँ बचय संपत्ति ।

478. हिसाबसँ खर्चक जँ बानि
आमद कमसँ कोनो ने हानि ।

479. शाहखर्चक संपत्ति थिक छाहरि
हहरैत नहि देरी ।

480. विभवसँ बेसी जँ करी दान
थोड़बे दिनमे हयब निदान ।

49. समय

481. दिन–देखार कौओ दिअय उल्लूकेँ पटकन
विजय ले' राजाकेँ चाही उचित अवसर ।

482. समयपर कयल चोट थिक ससरफानी
जे बान्हय भाग्यक गेँठ ।

483. किछु नहि असंभव साधब
जँ उचित समयपर उचित साधन ।

484. अवसर आ ठाम जँ ठेकनाबथि
तँ दुनियाँकेँ अपन संपत्ति बनाबथि ।

485. विश्वविजेता राखथि अवसरक ताक
एकाग्र भऽ ।

486. बचाकय राखथि चालि
अवसरपर धक्का समधानि ।

487. क्रोध–रोष नुकाबथि
अवसर देखि शत्रुकेँ पछाड़थि ।

488. शत्रुकेँ ताबे परतारू
अवसर आबय तँ पछाड़ू ।

489. अवसर जखन होय अजगूत
जोर लगाउ, करू अद्भुत ।

490. बगुला जकाँ लगाबी ध्यान
पबिते अवसर हरि ली प्राण ।

50. समुचित स्थान (युद्ध-भूमि)

491. जा धरि नहि ठेकनाबथि ठाम
ने शत्रुमे खोट, ने हलतलबीमे चोट ।

492. किला थिक बड़का बल
शूर-वीरहु ले' ।

493. दुर्बलो बली आ विजयी
ठेकनाओल जँ ठाम आ सुरक्षित संग्राम ।

494. दुश्मनकेँ पछाड़त
ठेकनाओल ठाँव आ विचारल दाव ।

495. पानिमे बली घड़ियार
भूमिपर आने बरियार ।

496. ने पानिमे रथ, ने भूमिपर नाव
ठाम देखिकय बदली दाव ।

497. साहसक आगू ककर जोर
उचित ठाम जँ करी सङोर ।

498. भरिगर सेना साँकड़ ठाँव
भग्न मनोबल, हारथि दाव ।

499. भले नहि किला, नहि हो बल
अपन भूमिपर जीतय दुर्बल ।

500. शिकारीपर भारी दन्तार
फसला पाँकमे तँ पछाड़तनि सियार ।

51. मन्त्रीक चुनाव आ विश्वास

501. अर्थ, धर्म, काम आ जिजीविषा
एहि चारिसँ पुरुष परीक्षा ।

502. शील-स्वभाव, गुणी, सुविचार
मंत्रीक हेतु नृप करथि विचार ।

503. विद्यावान, चरितमे नीक
सूक्ष्म दोष अजगुत नहि थीक ।

504. गुण आ दोष होय समतूल
चुनथि मंत्रिगण नृप अनुकूल ।

505. असल कसौटी थिक व्यवहार
चरित उदार वा हीन विचार ।

506. एहन जकर ने संग-समाज
चिन्हय केओ नहि, कक्कर लाज ?

507. प्रीतिक दोषे चुनथि बहेड़
सबतरि निष्फल लोक अनेर ।

508. परख, जाँच नहि, मनुख चिन्हार
वंश जनम कत सहत विकार ।

509. जाँची-परखी, चुनी भजारि
विश्वासे बल तकर पछाति ।

510. विश्वासीपर अविश्वास, आ अविश्वासीपर विश्वास
तँ विपत्तिसँ नहि उग्रास ।

52. नियुक्ति

511. गुण-अवगुण आ परखि स्वभाव
एहन गुणी नृप करथि चुनाव ।

512. आमद बढ़य, बढ़य संपत्ति
आओर हँटय बाधा-विपत्ति ।

513. बुद्धि, विवेक, संतुष्टिक योग
भक्ति, चारि गुण शुभ संयोग ।

514. कसौटीपर असली खाँटिओमे
संभव मौका अवसर पओने खोट ।

515. परिश्रम आ बुद्धिक आगाँ राज-भक्ति
उचित नहि नियुक्ति ।

516. कर्ता, कर्म, काल केर योग
सोचि-विचारि करथि उद्योग ।

517. एहि विधि पूर्ण हयत अभियान
कर्ता चीन्हि करथि विश्वास ।

518. चुनि कर्ता काजक अनुकूल
काजक भार देथि हो पूर ।

519. परिश्रमीपर थोड़ भरोस
अपने भागक हेतनि लोप ।

520. नित्तह नृपति रहथि चौचंक
सेवक सुपथ जगत निस्संक ।

53. कुटुम्ब

521. दिन वा अदिन कोनो नहि भेद
अपन समाङ सदा सङ देत ।

522. सऽर-समाङक सतत सौहार्द
समृद्धिक सहज सोहाग ।

523. धन हो विपुल कुटुमसँ दूर
बहय सरोवर जल भरपूर ।

524. धन-संपत्तिक उचित प्रयोग
कुटुमक संग बढ़य सहयोग ।

525. सुमधुर बोल विपुल उपहार
सर-सम्बन्धिक सतत सौहार्द ।

526. किनका भाग एते परिवार ?
जँ नहि राग, विपुल उपहार ।

527. बजबय, बाँटय अप्पन भोग
बढ़बय विभव काग-सन बोध ।

528. गुण-अनुरूप करथि व्यवहार
अनुगामीक बढ़य संसार ।

529. असंतोष केर उपड़य मूल
रूसल-फूलल आपस कूल ।

530. गेल अकारण, आयल बीच
सोचि-बिचारथि, तखन लगीच ।

54. विस्मरण

531. बिसरब, क्रोधसँ बढ़िकय दोष
कारण अति आमोद-प्रमोद ।

532. करय शिथिलता कीर्तिक नाश
जेना दरिद्रा बुद्धि-विनाश ।

533. सकल पुराणक एक विधान
शिथिल पुरुष नहि कदपि महान् ।

534. कायर हेतु किला कोन लाभ
बेपरबाहक सकल अभाग ।

535. पहिने शिथिल विपद आसन्न
मलथि हाथ पछताथि विपन्न ।

536. सदा जागरुक सबहक संग
एहन आओर गुणक नहि बंध ।

537. सदा सतर्क उद्यमी दक्ष
कोनो असम्भव नहिए लक्ष्य ।

538. गुनी, करी जे गुनिजन भाख
सात जनम धरि, बिसरि अभाग ।

539. जखन हर्ष आ अति आमोद
नृप जुनि बिसरथु शिथिलक भोग ।

540. बिसरी नहि मनमे जे राखि
सरल लक्ष्य हो एतबे भाखि ।

55. प्रभुता

541. अनुसन्धान, दृष्टि निष्पक्ष
दण्ड विधान रहय प्रत्यक्ष ।

542. भूमि पिपासु, मेघसँ पानि
प्रजा न्याय हित नृपकेँ मानि ।

543. सकल शास्त्र आ सद्व्यवहार
राजदण्ड थिक दृढ़ आधार ।

544. पूजय जन-जन पालक संग
नृपक पिरीति प्रजा हो धन्य ।

545. बरिसय मेघ अन्न नहि थोड़
नृपति न्यायप्रिय सुखद संयोग ।

546. राजदण्ड, नहि अस्त्रक जोर
नृप केर विजय असल संयोग ।

547. रक्षा सभक नृपक थिक धर्म
न्याय-कवच हो नृप केर संग ।

548. अन्वेषण ने न्यायक लेश
नृपति दूर बस, राज्यक शेष ।

549. रक्षक नृपति, प्रजासँ प्रीति
दण्ड न्याय, दोष नहि थीक ।

550. मृत्यु-दण्ड, नृप दुष्टकेँ दान
मोथा मूड़य जेना किसान ।

56. अराजकता

551. पापी आ क्रूर राजा
हो एहन ने हत्यारा ।

552. राजा करय उपहारक माङ
एहन नृपति थिक दस्यु समान ।

553. नित अन्वेषण, ने न्यायक सोच
शीघ्र पतन हो राज्यक लोप ।

554. दण्ड अधिक न्यायक नहि सोच
प्रजा, राज्य आ धन केर लोप ।

555. किछु नहि शेष लगाबथु जोर
गरिबक नोर भऽ पड़य अङोर ।

556. नृप केर न्याय बनय आधार
अन्याये हो बंटाढार ।

557. बज्जर भूमि मेघ नहि पानि
निर्दय नृप हो जीवक हानि ।

558. सम्पति विपतिओ सँ बलाय
जँ अन्यायी राजा बथाय ।

559. मेघो माङत माफी
जँ न्याय नहि हो राजाक साथी ।

560. गउ हो बाँझ, ब्राह्मणक हानि
नृप जँ छोड़थि रक्षाक बानि ।

57. आतंक

561. जाँचि-परखि अन्यायक दण्ड
अनीति निवारण पूरथि धर्म ।

562. विशद जाँच आ दण्ड अनुकूल
राज करथि नृप काल सुदूर ।

563. क्रूर नृपति, बढ़ल आतंक
एहन राज केर शीघ्रहि अंत ।

564. हेतनि अपवाद नृपति जँ क्रूर
आयु क्षीण सम्पति निर्मूल ।

565. केहन क्रूर, हा ! भाखय लोक
जीवन क्षीण राज्य केर लोप ।

566. बोल रोड़ाह, दयासँ हीन
धन विलीन, आयु हो क्षीण ।

567. अधिक दण्ड थिक रेती तेज
बोल मधुर नहि प्रभुता गेल ।

568. स्वल्प मन्त्रणा, आदर थोड़
क्षणहि क्रोधमे, अवनति योग ।

569. दुर्ग सुरक्षित, रचल ने व्यूह
रणमे भय आ प्राण दुरूह ।

570. पिरथी उपर एहन नहि भार
राजा क्रूर आ मूर्ख अमात्य ।

58. दया

571. दया मूल चलबय संसार
आभूषण ई गुण केर सार ।

572. दया धर्म मनुखक सिंगार
दया बिना नर पिरथिक भार ।

573. गबै जोग नहि, एहन कोन बयन
दया बिना केहन थिक नयन ?

574. आँखि रहैत दया नहि लेश
आँखि कोन जोग, आँखि बड़ बेस !

575. दया थिकै आँखिक आभूषण
दया बिना खाधि थिक लोचन ।

576. जडवत् वृक्ष आँखि बिनु स्नेह
करुणा कदपि लेश नहि नेह ।

577. दया बिना नर लोचनहीन
दया भरल तँ लोचन थीक ।

578. करुणा करथि, सम्हारथि काज
नृपक अपन थिक सकल समाज ।

579. बेजोड़ जे करुणा बरिसाबय
ओकरोपर जे दुख पहुँचाबय ।

580. पीबथि बिष, मुखपर हो हास
पुरुष प्रशंसित सकल समाज ।

59. गुप्तचर

581. नृपक कहाबय दुनू आँखि
राजधर्म आ गुप्तचर भाखि ।

582. नित दिन करय प्रजा कोन कर्म
सत्वर बूझब नृप केर धर्म ।

583. गुप्त सूचना केर नहि बोध
तनिक विजय नहि बूझी सोझ ।

584. सेवक, शत्रु, वृहत् परिवार
गुप्तचरक दृष्टि सबकात ।

585. छविक निरापद, गुप्त, निर्भीक
गुप्तचरक गुण असली थीक ।

586. साधक, यतिक रूप कत भेस
कष्ट सहथि भल मनहि उदेस ।

587. छिद्रान्वेष, गुप्त केर खोज
संशयहीन खोज टा होय ।

588. गुप्तचरक चुप हो सन्धान
राजधर्म केर यैह विधान ।

589. गुप्तचरक नहि हो भैयारी
तीन चरक गप एक, तँ मानी ।

590. गुप्तचरक नहि हो अभिनन्दन
प्रकट भेला तँ चर केर भंजन ।

60. उत्साह

591. ऊर्जावान भोगथि संपत्ति
ऊर्जाहीनक की संपत्ति ?

592. मनोबले थिक धन बेजोड़
संपति सबदिन थोड़बे थोड़ !

593. धन केर हानि, करथि नहि क्षोभ
आत्मबलक जँ शुभ संयोग ।

594. सम्पति आबय अपने द्वारि
उद्योगी नर बन्धु विचारि ।

595. ऊँच कमल हो कतबो पानि
बुद्धि-विचारे नर केर मानि ।

595. सोचथि ऊँच भले नहि सफल
एहन विफलता अपन नहि अरजल ।

597. लक्ष्य असिद्धि नहि मानी हारि
आहत हाथी दृढ़ समधानि ।

598. दुर्बल मनोबल
आ बलीसँ सम्मान ?

599. देहे बली, मनहिसँ भीरु
हाथी निर्बल बाघक बीच ।

600. मनस्वी स्वतः धनवान
आर सबहि छथि वृक्ष समान ।

61. आलस्य

601. आलस्यक धोन करय अन्हार
सद्‌गुण झाँपय क्षीण प्रकाश ।

602. सफल मनोरथ एके बाट
आलसकेँ दऽ मारी लात ।

603. आलस हृदय धरथि जे मूढ़
सबसँ पूर्व कुटुम निर्मूल ।

604. उद्यम घटय आलसक योग
बाढ़य दोष प्रतिष्ठा लोप ।

605. आलस, नीन, बिसरि कय धर्म
टालमटोल नाशक थिक कर्म ।

606. आलस, दोष कदपि नहि नीक
पृथ्वीपाल नृपति धन क्षीण ।

607. उद्यमहीन आलसक रोग
तिरस्कार आ गंजन भोग ।

608. राजा जतय आलसी नीन
शत्रु बली हो, नृपति अधीन ।

609. उद्यम बढ़य
घटय सब दोष ।

610. नृपतिक सहजहिँ तीनू लोक
नृप यदि जीतथि आलस-दोष ।

62. पुरुषार्थ

611. बूझि असम्भव मानी जुनि हारि
सफल परिश्रम निश्चय मानि ।

612. रही निरत लक्ष्यकेँ साधि
जग बिसरनि, जे मानथि हारि ।

613. दृढ़निश्चय केर गौरव
सबहक संग पूरब ।

614. शक्तिहीनक हाथसँ दान
नपुंसकक हाथमे खड्ग समान ।

615. श्रमजीवी, ने आनंदक लोभ
दृढ़ स्तम्भ सुहृदक संतोष ।

616. श्रमसँ उपजय धन
आलससँ निर्धनता ।

617. पद्मासन श्री ऊर्जावान
जेठि बहीन निरत विश्राम[1] ।

618. भाग्य कदपि नहि : पाबय दोष
बुद्धि अछैत जँ नहि उद्योग ।

619. रूसओ भाग्य, परिश्रम देत
बोनि कमाइक निश्चय भेट ।

620. करथि पराजित भाग्यक दोष
हारि ने मानथि श्रम संयोग ।

---

1. दरिद्रा (मूदेवी) लक्ष्मी (श्रीदेवी)क जेठि बहिन थिकी ।

63. अदम्य साहस

621. बचाबी विपत्तियहुमे हास
विजयी दृढ़निश्चय आ आस ।

622. दुर्भाग्यक बाढ़ि जँ अपार
साहसे तखन उतारय पार ।

623. शोकमे करी नहि शोक
तँ शोके पाबय अपनहि शोक ।

624. जीतय लगारी, बाधा हार
बड़द लगाबय गाड़ी पार ।

625. विपत्तिए हारय
पुरुष जँ विपत्तिक सेना पछाड़य ।

626. जँ सम्पत्तिसँ नहि अघोला
तँ विपत्तिसँ किए डेरयला ?

627. बुधजन नहि घबराथि
देह थिक दुःखक नेहाइ ।

628. ने ताकथि विलास
ने दुःखमे हताश ।

629. जे सुखमे नहि उधियाथि
से दुखमे नहि भसियाथि ।

630. जँ सुख-दुख हो एक समान
तँ शत्रुओसँ पाबी मान ।

II राज्यक विभिन्न अंग

64. मंत्री

631. साधन, समय, सम्पादन, साध्य
मंत्री कुशल सम्हारय काज ।
632. मन्त्रिक गुण पाँच
उद्यम, दृढ़ता, बुद्धि, विवेक, चौँकि ।
633. तोड़थि, जोड़थि, बौंसथि बन्धु
मंत्री कुशल सरल अनुबंध ।
634. मन्त्रिक कर्तव्य
अनुसन्धान, उद्यम आ मन्त्रणा ।
635. कार्य-कुशल, वाकमे नीक
रीति-निपुण, अमात्य प्रवीण ।
636. थोथी आ बोध
करत के विरोध ?
637. पीने भलहि शास्त्र केर सार
राखी सदा कुशल व्यवहार ।
638. देब उचित थिक उचित विचार
भले होथि अमरुख नरपाल ।
639. अविश्वसनीय मंत्री
शत्रुक सत्तरि करोड़ सेनासँ घातक ।
640. मन्त्री जँ पद्धति नहि जान
विफल हयत नियोजितो अभियान ।

65. वाक्पटुता

641. कहब बुझायबकेँ यदि ज्ञान
पटुता थिक अनुपम वरदान ।

642. बोले बनाबय, दिअय बिगाड़ि
मुँहकेँ राखी सम्हारि ।

643. बानि हो तेहन मीठ
नहि सुनलक तकरो आनय झीकि ।

644. ने एहन गुण, ने एहन धन
बुझी लोकक गुण, बाजी तखन ।

645. बाजी एहन बात
जे रहय निर्विवाद ।

646. बाजि बुझाबथि, सूनथि कान
मंत्रि निपुण जन सबतरि भान ।

647. वक्ता प्रखर, सुबुधि, निर्भीक
करब पराजित सक नहि थीक ।

648. सरल, मधुर आ बोधगर बोल
दौगल आबय, सूनय लोक ।

649. संक्षिप्त आ समीचीन
बजंताक सक्क नहि थिक ।

650. बुद्धिमान, बजबाक ने लूरि
बिनु सुगन्धिक फूल ।

66. सदाचार

651. मित्र विपुल धन करथि पूर
शुचि आचार सेहन्ता पूर ।

652. ने यश ने लाभ
करी जुनि एहन काज ।

653. यशोलाभ केर जँ अभिलाष
करी काज नहि हो अपवाद ।

654. भय अपवादक, देखथि आगु
विपरीत काल अनीति नहि काज ।

655. करी एहन जे नहि पछताइ
कयल जखन तँ जुनि पछताइ ।

656. बरजथि बुधजन अनुचित काज
खाहे माता पड़थि उपास ।

657. संचय सम्पति आ अपवाद
धन बुधजन भल सहथि अभाव ।

658. बरजल काज करथि जे लोक
फलय आदि भल अंतहि शोक ।

659. अरजल फलय, कतहु किछु हानि
हरल नोरसँ, नोरहि जाइनि ।

660. संचय चोरिक अरजल धन
काँचे घैलमे भरल जल ।

67. दक्षता

661. मनोबले कार्यकुशलता
बाँकी सुक सहायता ।

662. सर्वस्वान्त, ने नोती, ने मानी हारि
बुधजन पाड़ल दू गो डाँरि ।

663. सफल अभियान होअओ प्रत्यक्ष
खुजल चालि तँ शोक अनन्त ।

664. सुलभ छै, बाट देखायब
कठिन छै, चलिकय देखायब ।

665. प्रेरणा यशक आ सफल अभियान
कीर्ति नृपक, हो मन्त्रिक मान ।

666. सकल लक्ष्यकेँ साधी
जँ दृढ़ निश्चय अपनाबी ।

667. परखी गुण देखी नहि भेष
कील धुरीमे, तँ पहियाक खेल ।

668. दृढ़ आ निर्द्वंद्व
कनियो ने करी विलम्ब ।

669. दृढ़तासँ लक्ष्यकेँ पकड़ी खेहारि
केहनो बाधा जुनि मानी हारि ।

670. कतबो गुणी, दसक कोन काज
दृढ़ निश्चय नहि, नहि ताकय समाज ।

68. कार्य-संचालन

671. निर्णय करी, संवादक अंत
अनुचित थिक, नहि करी विलम्ब ।

672. करी तखन जँ उचित विलम्ब
शीघ्र उचित, तँ सत्वर कर्म ।

673. संभव जतय, लगाबी चोट
अन्तय ताकी आर विकल्प ।

674. चोटाओल शत्रु आ अराधल संग्राम
थिक पझाइत आगि ।

675. आयुध, साधन, साध्य, देश, काल
पाँच परखि कय आगुक चाल ।

676. तौली लागत, लाभ आ बाधा
उठाबी तखन डेग ।

677. भेदीसँ भेद ली जानि
थिकै सफल अभियानक बानि ।

678. एक सफल तँ नोती दोसर
पाँती हाथिक पहिल तँ दोसर ।

679. पहिने शत्रुक शत्रुसँ यारी
तखन मित्रक सहायताक तैयारी ।

680. बलीसँ करी संधि
डेराइ जँ दुर्बलता आ उपद्रव सँ ।

69. दूत

681. दूत चाही स्नेही, कुलीन आ सौजन्यशील
जे भावनि राजाकेँ ।

682. दूतकेँ तीन गुण
वाक्‌चातुरी, निष्ठा आ बुद्धि ।

683. शक्तिमानक सोझाँ सफलता
तँ चाही ज्ञान आ दक्षता ।

684. होइनि व्यक्तित्व, चतुराइ आ शास्त्रक ज्ञान
तँ बनथु राजाक दूत ।

685. दूतक भाषा
सादर, संक्षिप्त, सार्थक आ प्रियगर ।

686. शान्त स्वभाव, शास्त्र केर ज्ञान
सहमति सुलभ, कुशल मतिमान ।

687. बूझी काज, समय आ ठाम
बाजी शब्द कयल हो ध्यान ।

688. दूत केर चारि गुण
सामाजिकता, नीति, साहस आ सत्य ।

689. शब्द एहन नहि छोड़य दाग
दूतक वाक् नहि एहन स्वभाव ।

690. निपुण दूत केर थिक पहिचान
नृपक हेतु हो जीवन दान ।

70. राजाक साहचर्य

691. चारूकात लोक बीचमे घूड़
राजाक दरबारी, ने लग, ने दूर ।

692. जँ हो राजासँ उपहारक मोह
किन्नहु ने करी राजाक प्रिय वस्तुक लोभ ।

693. सावधान ! करी जुनि कनेको भूल
बड मोसकिलसँ होइछ संशय निर्मूल ।

694. पैघ लोक लग
जुनि करी कनफुसकी आ नै दिऐ चिन्हार मुसकी ।

695. ने धरी पछोड़, ने सुनी राजाक गप्प
सुनू, जँ अपने करथि प्रगट ।

696. परखि मनोभाव, समय आ प्रीति
बाजी नहि जे हो विपरीत ।

697. कतबो करथि पुछारि
बाजी सार्थक, किन्नहु ने निरर्थक ।

698. सदा चली रीतिक अनुकूल
नृपकेँ जुनि बूझी सम्बन्धी, सङतूर ।

699. भले नृपक हो अति सम्मान
चूक कदपि नहि जे मतिमान ।

700. पहिलुक सख्य बूझि नहि भूल
रही सतर्क, हयब निर्मूल !

71. पूर्वाभास आ दृष्टि

701. पिरथीपर छथि असली रत्न
बिनु सुनने जे बूझथि मन ।

702. बूझब अनकर मोनक भाव
निश्चित देवक थिकै स्वभाव ।

703. अपन ज्ञानसँ दोसरक मोन
पढ़थि पुरुष सरिपहुँ अनमोल ।

704. मनुष एक रंग किछु नहि मेल
मन जे बूझथि, व्यक्ति विशेष ।

705. मुँह देखी नहि बूझी सार
आँखिक जोड़ा थिक बेकार ।

706. दर्पणमे झलकैछ मुँह
मुँहपर झलकैछ मोन ।

707. मुँहोसँ बेसी अगरजानी ?
कहत, मोन खनहन, वा परेशानी !

708. सहृदय नयन, दृष्टि धरि गेल
कुल अभिलाषा पूरित भेल ।

709. आँखिक भाव पढ़थि जे स्वच्छ
बैर प्रीति नयनहिँ परतच्छ ।

710. चतुर करथि नहि किछु व्यवहार
आँखि छोड़िकय आओर भजार ।

72. सभाकेँ थाहब

711. निरखि सभासद समुचित भाख
निर्मल हृदय शब्द परिपाक ।

712. भाषण निपुण करथि पड़ताल
अवसर उचित कहथि निज बात ।

713. श्रोता केहन विषयक नहि ज्ञान
शब्दक लूरि बिना नहि मान ।

714. बुधजन माँझ चमत्कृत मंत्री
समाजहि सरल समान ।

715. विनय मूल सिखबय सम्हार
गुणी बीच जुनि होइ देखार ।

716. गुनिजनक बीच भसियायब
जेना सज्जनक पथ भुतियायब ।

717. गुणवानक सभामे होइछ
विद्वानक मान ।

718. बुझनुक श्रोता उर्वर भूमि
भाषण जल सम भैषज गुण ।

719. गुणीजनक बूझक जे बात
बिसरियो नहि चर्च मूढ़क साथ ।

720. अमरुख श्रोता किछु नहि बोध
भाषण अमृत भूमिक योग ।

73. सभामे निर्भीक प्रतिपादन

721. थाहथि सभा करथि नहि भूल
वक्ता निपुण कहथि अनुकूल ।

722. पढ़ल विलक्षण थिका मतिमान
सहमत तर्क सुनथि विद्वान ।

723. रणमे निहत कतेको वीर
विरले करथि तर्क गम्भीर ।

724. अपने कही, सिखथु विद्वान
अपनहुँ सुनी दोसरक ज्ञान ।

725. शब्दक रीति, सिखी शास्त्रार्थ
निर्भय करी मतक प्रतिवाद ।

726. कायर हृदय खड्ग की लाभ
विद्या विफल, फुटय नहि वाक् ।

727. विद्वान केहन सभा नहि बोल
संग तरुआरि नपुंसकक किलोल ।

728. कतबो गुणी थिका बेकार
विद्वज्जन पर शून्य प्रभाव ।

729. नाम शास्त्रविद्, बाजि न भेल
एहन पुरुष निरक्षरहुसँ गेल ।

730. ज्ञानक खान, सभामे भीत
बोल फुटल नहि, मरले थिक ।

III राज्यक अंग

74. भूभाग (राज्य)

731. वणिक समृद्ध आ श्रमिक किसान
ज्ञानी जतय देश से भान ।

732. विपुल सम्पत्ति, स्वास्थ्य, धन–धान्य
दोसरक इरखा देश से भान ।

733. भूमि आदर्श, उठाबय बोझ
स्वेच्छा दान करय कर लोक ।

734. जतय भूख नहि, युद्ध ने रोग
भू आदर्श असल संयोग ।

735. बिना उपद्रव, गुट ने द्रोह
राज्य आदर्शक ई थिक योग ।

736. काल अकाल देश नहि देख
पड़य अकाल कोनो नहि क्लेश ।

737. राज्यक अवयव जल आ दुर्ग
पर्वत, भूमि जलहि परिपूर्ण ।

738. सुख, समृद्धि, सुरक्षा, स्वास्थ्य
भूमि उर्वरा, पाँच सिंगार ।

739. उपजा बिना परिश्रम अन्न
एहन देश की ? श्रमहि विपन्न ।

740. राजा प्रजा असहमत देश
आन सबहि गुण थिक निःशेष ।

75. किला

741. आक्रामक वा प्रतिरक्षा ले'
किला थीक सर्वोपरि ।

742. गिरि, पर्वत, सागर, मैदान
जंगल सघन दुर्गक पहिचान ।

743. सबल, दुर्भेद्य, उन्नत प्राचीर
शास्त्र कहय दुर्ग से थीक ।

744. विस्तृत परिसर दुर्बलता थोड़
शत्रुक हृदय करय कमजोर ।

745. सुलभ नहि विजय सबल जँ दुर्ग
विपुल व्यवस्था दल अनुकूल ।

746. सब सुभीता भले उपलब्ध
दुर्ग ले' चाही सैन्य कुशल ।

747. युद्ध, द्रोह नहि दुर्गक हार
पानि-बिहाड़िक सहय प्रहार ।

748. सहय प्रहार, विजय केर स्वाद
दुर्ग आदर्श रहय आबाद ।

749. दुर्गक कीर्ति शत्रु केर हानि
प्रारम्भहि हो शत्रुक ग्लानि ।

750. कर्मठ, दृढ़, कुशल, वीर, उदात्त
सेना नहि तँ दुर्गक की काज ?

76. सम्पत्ति

751. सम्पत्ति-सन नहि आओर सुयोग
सम्पत्तिए होथि बुड़िलेलहुँ योग्य ।

752. धनिकक सबतरि हो गुणगान
निर्धनकेँ सहजहिँ अपमान ।

753. संपत्ति पसारय अमर प्रकाश
दूर देश धरि मनक हुलास ।

754. श्रमसँ अरजल वैभव नीक
गुणकारी आ सुखमय थीक ।

755. स्वेच्छा प्रीतिए आदान-प्रदान
से नहि तँ अस्पृश्य निदान ।

756. उपहार, राजस्व, स्वामीहीन धन
नृप केर थिक, पराजित शत्रुक वैभव ।

757. प्रेमक पूत दया, केर धाइ
धन थिक पोषक, पालक माइ ।

758. धनक व्यवसाय करथि श्रीमंत
गिरिसँ देखथि गज केर द्वन्द्व ।

759. संचय सम्पति, अद्भुत अस्त्र
शत्रुक गौरव सहजहि नष्ट ।

760. सम्पति संचय नीतिक रीति
बाँकी दू टा सहजहिँ थीक ।

77. सेना

761. सृदृढ़ सेना आ निर्भीक
नृप केर असली संपति थिक ।

762. दिग्गज, दक्ष रहथि निर्भीक
भले पराजय, रण विपरीत ।

763. मूसक सेना, सागर-सन हुंकार
छने नि:शब्द सुनि नागक फुफकार ।

764. सेना केर असल वरदान
योद्धा विदित निष्ठ बलवान ।

765. सेना सफल संगठित एक
मृत्यु पराजित, करय अनेक ।

766. सेना केर चारिटा ढाल
साहस, दृढ़ता, रीति, सम्मान ।

767. करथि सामना, आओर प्रपंच
शत्रुक प्रगति, रणनीतिक अंत ।

768. नहिओ निपुण प्रगति, प्रतिरोध
सम्भव, सैन्य लागय बेजोड़ ।

769. सेना निश्चय पाबय जीत
त्याग-पलायन, जँ नहि दीन ।

770. बड़का सेना, कतबो वीर
नेता नहि जँ, हयत विलीन ।

78. वीरता

771. शत्रु, नृपतिसँ जुनि करु द्वेष
पूर्व कयल, छथि पाथर भेष !

772. चुकल बरछी गजक नहि हानि
तीरक श्रेय नहि, खढ़िया मारि ।

773. रणमे वीर हयब पुरुषार्थ
तै सँ बीस रिपुक उपकार ।

774. हाथक बरछी गजक प्रहार
छातिक बरछी करथि बहार ।

775. जखन शत्रु केर शस्त्र प्रहार
पल झपकायब वीरक ह्रास ।

776. वीर बुझथि ई दिनक ह्रास
जँ नहि युद्धक सहथि प्रहार ।

777. शोभय काड़ा वीरक पैर
शूर कीर्ति हित मृत्युक वैर ।

778. कोप नृपति केर पयर न पाछु
उद्यत मृत्युक युद्ध निष्णात् ।

779. निन्दा केहन ? वचन नहि पूर !
वचने देल प्राण आहूति ।

780. अहा ! मृत्यु थिक केहन महान
नृपक नयन जँ अश्रु-स्नान ।

79. मित्रलाभ

781. विरले की ? नहि जँ मित्रलाभ
शत्रुक विरुद्ध एहन कोन ढाल ?

782. बुधजन प्रीति इजोरियाक चान
मूर्खक प्रीति अन्हरिया म्लान ।

783. उत्तम पोथी सज्जन मीत
संगति बढ़य सुखद अनुभूति ।

784. मैत्री नहि सुदुक हास-परिहास
पथसँ विपथ तुरत धिक्कार ।

785. सतत सम्पर्क, समय नहि योग
मैत्री थिक सोचक संयोग ।

786. संगति, हास तदपि नहि मेल
मनहिक मेल मित्रता भेल ।

787. अनुचित रोकय, देखबय बाट
दुखमे मित्र निबाहय साथ ।

788. ससरय वस्त्र, सम्हारय हाथ
विपरीत काल मीत केर साथ ।

789. आसन ऊँच, मित्रता-भाव
सुख आ दुखमे एक स्वभाव ।

790. मैत्री नीच, पिटी जँ ढोल
'मैत्री हमर परम अनमोल' ।

80. मित्र कोना चुनी

791. बिनु चिन्हने जुनि बनबी यार
जीवन भरि, निबाहब भार ।

792. हलतलबीमे करी यारी
तँ निचेनमे पछताबी ।

793. बूझि स्वभाव बनाबी यार
चीन्हि दोष, बन्धु, परिवार ।

794. व्यक्ति कुलीन आ चाहथि मान
खरचथि मूर भजारक नाम ।

795. चुकलहु, दपटथि, आबय नोर
मित्र देखाबथि बाटक ओर ।

796. विपति माप, भजारय यार
देखि पसारि, नापय उपकार ।

797. ईश्वरक कयल पैघ उपकार
मूर्ख मित्रसँ भेल निजात ।

798. घटय मनोबल तेहन सोच
छोड़ी मित्र करथि कमजोर ।

799. मित्रक विश्वासघात दैछ पीड़ा
मृत्युशय्यहु पर ।

800. सज्जनसँ निबाही मैत्री अनमोल
दुष्टसँ तोड़ी मेल, पड़य भले मोल ।

81. घनिष्टता

801. घनिष्टताक सोझ आचार
क्षति ने कनियो करय व्यवहार ।

802. अपेक्षाक निहित अधिकार
बुधजन करथि सौजन्यक स्वाद ।

803. एहन कोन यारी ?
मित्रताक बोधेँ कयलकेँ नकारी !

804. मित्र स्वतः निबारथि काज
बुधजन मोन अमित अनुराग ।

805. बिसरी, मित्र लगाओल चोट
थिका अबूझ ! अपेक्षाक दोष ।

806. भले भेल हो कतबो हानि
मित्र तजथि नहि अप्पन बानि ।

807. कनियो घटय नहि प्रेमक भाव
मित्रक व्याजेँ भले अभाव ।

808. अप्रिय जँ मित्रक अपवाद
कहथि 'दिन नीक', भले अपकार ।

809. दृढ़ विश्वास मैत्री दीर्घ
होय प्रतिष्ठा सबहक प्रीति ।

810. शत्रुओ करय प्रशंसा निष्ठाक
मित्रक दोष बिसरथि जे सबटा ।

82. दुष्टक संग मित्रता

811. दुष्ट संग अतिशय आपकता
भने घटय किन्नहु नहि बढ़य ।

812. मित्र सुदिन, तजथि दिन भारी
बढ़ओ मेल वा टूटओ यारी ।

813. मीत करथि लाभ केर खोज
अंतर की वेश्या वा चोर ?

814. एसगर नीक, बिपति नहि संग
घोड़ा अनाड़ी रणमे चितंग ।

815. बेर-बिपति कोनो नहि पुछारी
एहिसँ नीक नहिए हो यारी ।

816. मूर्खक संग अपनैतीसँ कोटि गुण नीक
बोधगरक शत्रुता ।

817. शत्रुक राग दस कोटि बीस
बिपटा आ मूर्खक संग किन्नहु नहि नीक ।

818. सक्षम, अवसर धयल नहि हाथ
रसे-रसे छोड़ी एहनाक साथ ।

819. कथनी-करनीमे नहि मेल
अनुचित सोचब सपनहुँ मेल ।

820. लग तँ मीत, अंतय उपहास
एहन मीतसँ दूरहि बास ।

83. मिथ्या मित्र

821. फुसिएक मित्र, असल निहाइ
हृदय प्रीति नहि, चोटे खाइ ।

822. बन्धु कहाबथि, हिय नहि भाव
क्षणमे बदलय नारि स्वभाव ।

823. वेद पढ़थि खल गुनथि अतीत
विरले जागय हिरदय प्रीति ।

824. मुँहपर मुसुकी भीतर खोट
एहन मनुखकेँ राखी ओट ।

825. मिलय नहि मन
विश्वास नहि बोल-वचन ।

826. चटसँ चीन्हब शत्रुक बोल
चाहे लागय अति अनमोल ।

827. नमय धनुष आ चलबय वाण
नम्र शत्रु, रही समधान ।

828. छूरी छिपल जोड़ल हाथ
आँखिक नोरक नहि विश्वास ।

829. खाने प्रशंसा, पाछु उपहास
करी संतुष्ट आ उचिते घात ।

830. शत्रु, मित्रवत् आबथि द्वारि
दियइ मुसुकी, रही सम्हारि ।

84. चूक

831. तजल नीक गहि हानिक मूल
शुभ ससरय थिक निश्चय भूल ।

832. वर्जित ले' मोह
थिक दोषहुमे दोष ।

833. लाज-धाख ने आदर-प्रेम
जिज्ञासा नहि, मूर्खक नेम ।

834. पढ़थि-गुनथि आ बाँटथि ज्ञान
जँ नहि संयम मूर्ख प्रमाण ।

835. एक जन्ममे कलुषित कर्म
मूर्ख नरकमे सात जनम ।

836. अमरुखक काज : नाश
अपनो गरदनि फाँस ।

837. मूर्खक वैभव
अनठियाक हुलास, घरमे उपास ।

838. अमरुखा पौलनि धान
बताह, निशामे उन्मन !

839. मूर्खसँ यारी उत्कट स्वाद
टूटल भले, कोन अवसाद ?

840. गुनिजनक संग अमरुखक बैसाड़
आसन स्वच्छ आ पयर थलाह ।

85. भ्रम

841. अभावमे अभाव, ज्ञानक अभाव
आओर कथुक नहि जग मानय प्रभाव ।

842. मूर्खक हाथेँ देल दान
थिक अर्जित पुण्यक प्रतिदान ।

843. शत्रु एतेक करनि नहि हानि
अपन मूर्खता जते बिसानि ।

844. भ्रम थिक असली किछु नहि आर
अपने हम छी बड़ बुधियार ।

845. पढ़ल शास्त्र नहि करी बखान
अपनो पढ़लक नहि हो सम्मान ।

846. मुरखक झाँपन केहन सम्हार ?
करय मूर्ख केर कर्म उघार ।

847. मूर्ख थिका जे मारथि लात
बूझल सीखल ज्ञानक बात ।

848. सुनथि ज्ञान नहि अपने मंद
महारोग धरि जीवन अंत ।

849. आँखिक आन्हर, केहन इजोत
देखय ओतबे जेहने सोच ।

850. जग मानय, मूरख नहि मान
एहन मूर्ख थिक असुर समान ।

86. दुष्टता

851. प्राणिमात्रमे करय विभेद
बूझथि व्याधि शत्रुता द्वेष ।

852. दोसरक घृणा, हानिक हो बोध
छोड़ी तदपि रोष-प्रतिशोध ।

853. घृणा रोग जे करथि विनाश
अमर प्रशंसा यशक विकास ।

854. नष्ट दुष्टता घातक रोग
सबतरि हो अद्भुत परितोष ।

855. कहू करत के रण-संग्राम
जनिकर हियसँ द्वेषक नाश ।

856. शीघ्र अंत धनक आ प्राण
पुरुष घृणा जे करथि बखान ।

857. हियमे द्वेष, दोसरक नाश
अमर नीतिमे नहि विश्वास ।

858. घृणा मूल थिक सकल विनाश
घृणा दूर तँ सद्यः लाभ ।

859. सुख अभिलाष घृणासँ दूर
सर्वस्वान्त द्वेष कर पूर ।

860. सकल अमंगल द्वेषक फल
प्रीति बढ़ाबय सद्गुण बल ।

87. सुलभ संग्राम

861. ने छोड़ी दुर्बलक अवरोध
ने अराधी बली केर विरोध ।

862. कुटुमक प्रेम ने मित्रक बल
लड़ता कोना शत्रु प्रबल ?

863. कायर, कृपण, कुशल नहि मेल
सुलभ शत्रु ले' मारल गेल ।

864. अतिशय क्रोध, ने रहय सम्हार
कत्तहु, ककरो सुलभ शिकार ।

865. नीतिविहीन गुणक नहि लेश
ने परबाहि, शुभ शत्रुक हेतु ।

866. क्रोधेँ आन्हर अतिशय लोभ
सुलभ लक्ष्य से शत्रुक भेल ।

867. अनुचित करय, विपरित उद्योग
कीनि अराधी तकर विरोध ।

868. दोषक खान गुणक नहि लेश
मित्रहीन शुभ शत्रुक हेतु ।

869. भाग्य शत्रु मूर्ख आ क्लीव
हर्ष विजय केर होय असीम ।

870. ससरय विजय, शत्रु गुणहीन
यशोलाभ हुनकर नहि थीक ।

88. घृणा

871. विनाशक शत्रुता केर भाव
बिसरियो नहि एकर अभ्यास ।

872. भले धनुर्धर शत्रु जँ बाध्य
करी वैर जुनि मंत्रि-अमात्य ।

873. दीन मतिभ्रम एसगर एक
अपने टा आ शत्रु अनेक ।

874. निर्भर निपुण जनपद निस्संक
सफल मित्रता जँ शत्रुक संग ।

875. युगल शत्रु आ अपने एक
मित्र बनाबी, शत्रु विभेद ।

876. करी भरोस, वा हो नहि विश्वास
बेर-बिपतिमे रही समभाव ।

877. मित्रहुक संग नहि दुखक बखान
निज दुर्बलता शत्रु न जान ।

878. योजना, सुरक्षा आ बल
करत शत्रुक आशा ध्वंस ।

879. तन्नुक झाड़ उपाड़ी काँट
भेल वृक्ष तँ हाथे नाश ।

880. घृणित शत्रु नहि भेल विनाश
हयत प्रहार हरण हो श्वास ।

89. शत्रुता

881. अति छाहरि व' वारि प्रतिकूल
कुटिल कुटुम थिक दुःखक मूल।

882. डेराइ नहि, शत्रु लेने तरुआरि
डेराइ, शत्रु धेने मित्रक बानि ।

883. छद्म घृणा कुम्हारक ताग
क्षणमे काटत भीतर घात ।

884. गुप्त शत्रुता बढ़बय द्रोह
अपनहु कुटुम करय विद्रोह ।

885. कुटुम-बीच सुनगय जँ द्वेष
कत अपराध वधक सन्देह ।

886. स्वजनक बीच बढ़य विद्वेष
प्राण बचायब धरि सन्देह ।

887. सम्पुट एके धयने रूप
गृहकलहक परिणामे फूट ।

888. काटय सोना रेतिक धार
गृहकलह तोड़य परिवार ।

889. तिल मात्र भले हो द्वेष
महाविनाशक बीज विशेष ।

890. रही एकसंग थोड़ मिलाप
बास कुटी, संग गहुमन साप ।

90. श्रेष्ठक अनादर

891. अपन सुरक्षा केर विधान
सबल जनक नहि हो अपमान ।

892. करी अनादर सबल बलमन्त
हुनकहि हाथे बिपति अनन्त ।

893. नीति सुनी नहि बलीक विपरीत
मंसा नाशक निश्चय थीक ।

894. प्रबल-सबलकेँ कय अपमान
नोती यमकेँ मृत्यु समान ।

895. महाबलीसँ करथि अराडि़
शरण कतहु हो, प्राणक हानि ।

896. बडबानलसँ बाँचय प्राण
ऋषिक रोष थिक मृत्यु समान ।

897. नृपति अराधथि ऋषि केर राग
ठाठ राजसी धूरि समान ।

898. पर्वत प्रवर मुनि उद्यत नाश
अमर नृपति केर मूल विनाश ।

899. जागय मुनि केर क्रोधक ताप
इन्द्रहु नष्ट त्वरित सन्ताप ।

900. सेना प्रबल कुटुम परिवार
ऋषि केर रोष विनाशक द्वार ।

91. नारीक अगुआइ

901. पत्नी–निरत, गुणक नहि वृद्धि
एहन बानि, नहि श्रम–समृद्धि ।

902. यशक सोच नहि रति आ नारि
धन ने वैभव अतिशय ग्लानि ।

903. अजगुत बानि समर्पित नारि
नित्य ग्लानि दुख सुपुरुष जानि ।

904. नारिक भय नहि आगुक सोच
विजय कतहु ने कीर्तिक भोग ।

905. नित भयभीत, नारिसँ भीत
उचित कीर्ति सम्भव नहि थीक ।

906. सुखी देव–सन नारिमे लीन
पौरुषहीन कान्हपर दीन ।

907. श्रेष्ठ थिकी बरु गुणवति नारि
दास नारि केर पुरुष बेकार ।

908. यशोकीर्ति ने हितक सहयोग
पुरुष नारिव्रत समये थोड़ ।

909. गुण समृद्धि सुख केर नहि भोग
पुरुष दास जँ नारि प्रकोप ।

910. पुरुष मनस्वी मुक्त विचार
पत्नीभक्ति सँ करथि प्रकार ।

92. नगर वधू

911. देहक गहना, मिठगर बोल
लोभ, प्रेम नहि, नाशक ओर ।

912. देखाय वैभव बाजय मीठ
एहन नारि सङ लागि ने नीक ।

913. द्रव्य देथि आ लपटथि अंग
अन्धकोष्ठ शव अनबुझ संग ।

914. गुनिजन जे चाहथि सम्मान
करथि छूति नहि नारि निदान ।

915. ज्ञानी पुरुष कुलिन निष्णात
संग कदपि जे बेचय गात ।

916. मिथ्यागुण आ फुसिएक प्रेम
फेरथि मुँह नर गुणी विशेष ।

917. शून्य बुद्धि टा लगबथि अंग
हृदय मिलय नहि प्रेमक दम्भ ।

918. बुद्धिहीन ने बूझथि योग
नारि मोहिनी नाशक भोग ।

919. तन्नुक बाँहि रत्नसँ पूर
नारि नरक नर पाँक अबूझ ।

920. मदिरा द्यूत आ दुष्कर नारि
संग जकर सुख संपति भागि ।

93. मद्य-निषेध

921. घटय प्रतिष्ठा शत्रु मे मान
पीबथि ताड़ी नहि सम्मान ।

922. करी कदपि ने मदिरापान
पीबथु जँ नहि गुणक सम्मान ।

923. मध्यप मुदित हानि मन मातु
बुध-विवेकीक छोड़ी बात ।

924. 'लाज'हु विमुख सम गुणवति नारि
मद्यप अधम लुतुकसँ हारि ।

925. टाका खरची होइ अचेत
अज्ञानहुमे भेल विशेष ।

926. निद्रा आर मरण नहि भेद
मदिरा-मद्य गरल थिक एक ।

927. पीबथि नुका करजनी आँखि
नगर हँसारतकेँ नहि जानि ।

928. मदिरा सेवी जुनि बाजी फूसि
'कयल निसाँ नहि', सत्य प्रतीत ।

929. डुबल अथाह दीप लऽ खोज
निशाबाज सङ तर्कक योग ।

930. अपने सम्मत, देखथि मत्त
नाश किए नहि बूझब सक्क ?

94. जूआ

931. भने जीत, जुनि खेलक लोभ
जीत बोर थिक बंसिक नोक ।

932. हारथि सय आ जीतथि एक
सम्भव बृद्धि जुआरिक हेतु ?

933. जूआ खेलाइ आ बिसरी काज
वैभव अपन गमाबी साफ ।

934. जूआ-सन ने सरल उपाय
सुख धन हानि, प्रतिष्ठा जाय ।

935. सर्वस्वान्त, ने छोड़ल खेल
चटिया-गोटी-हाथक मेल ।

936. जूआ दरिद्रा पकड़ल घेँट
जरत पेट आ नरकक भेँट ।

937. नाश, जुआमे बीतल काल
पूर्वक सम्पति आ सम्मान ।

938. फूसिक खेती दुख केर मूल
सम्पति, शील जुअहि निर्मूल ।

939. शिक्षा, सुख, कीर्ति आ मान
जुआ हरय भोजन, परिधान ।

940. दुखमय जीवन नहि परवाहि
बाजी चलय भले हो हारि ।

95. चिकित्सा

941. कमी, अधिकसँ होअय रोग
कऽफ, पित्त, वायुक संयोग ।

942. पहिलुक पचय तखन जँ खाइ
तँ नहि चाही कोनो दवाइ ।

943. समुचित भोजन पचलाक बाद
दीर्घ काल धरि रही अबाद ।

944. भोजन पचल, क्षुधा हो तेज
भोजन समुचित बिना निषेध ।

945. सुपच आहार हिसाबेँ भोग
दुख पीड़ा नहि, रही निरोग ।

946. मित आहारी रहथि निरोग
भोजनभटकेँ रोगक भोग ।

947. अति आहार पचय नहि भोग
कष्ट अनेको, नौ टा रोग ।

948. ताकी कारण करी निदान
उचित चिकित्सा केर संधान ।

949. अवसर-समय रोगी आ रोग
वैद्य निपुण रोगक प्रतिरोध ।

950. रोगी, वैद्य, सेवक, उपचार
चारि खाम्हपर रोग-विचार ।

IV परिशिष्ट

96. कुल

951. कुलीनक जन्मजात
संकोच आ सुचिता ।
952. सदाचार सत्य आ शील
कदपि चूक नहि करथि कुलीन ।
953. मधुर बोल आ हृदय उदार
कुल-मूलक गुण सद्व्यवहार ।
954. वैभव विपुल कतबो हो लाभ
नहि कुलीन हीन व्यवहार ।
955. भने दानमे करथि अबेर
सुपुरुष कदपि ने करथि अन्हेर ।
956. मिथ्याचार हीन आचार
उज्ज्वल कुल केर नहि व्यवहार ।
957. उज्ज्वल कुल आ कनियो चूक
चानक मुख आ कारी रूप ।
958. बोल रोड़ाह, हृदय नहि प्रीति
कुल-मूले संशयमय थीक ।
959. माटिक गुण गाछ
कुलक गुण बात ।
960. काज गुणक की ने लाज-संकोच
विनय-विहीन कुलक की रोच ?

97. सम्मान

961. जीवन हो दुष्कर वा नीक
घृणित काज कऽरक नहि थीक ।

962. यशो कीर्ति सङ हो सम्मान
सम्माने नहि, की कीर्तिक मान ?

963. अति उन्नति हो बनी विनम्र
दिन अदीन तँ दृढ़ता संग ।

964. शोभा माथक भूपर दीन
केश जकाँ पदच्युत नर हीन ।

965. गिरि-पर्वतसँ यश धरि ऊँच
धूल समान करय निर्मूल ।

966. अहंकार कयने की लाभ
भूपर यश नहि, स्वर्ग समाप्त ।

967. दोसरक आसक जीवन हीन
एहिसँ नीक तँ मरणे थीक ।

968. प्राण बचाबी मानक हानि
हयब अमर ? मृत्युक भय नऽहि ।

969. चँवर हेतु हत चँवरी गाइ
सम्मानक हित नर प्राण गमाय ।

970. जग भरि अस्तुति सबतरि गान
मृत्यु वरण, नहि क्षति सम्मान ।

98. महानता

971. ऊँच मनोरथ, उत्तम कीर्ति
बिना मनोरथ मरणे थीक ।

972. जन्म मनुक्खाक एके रंग
मोल विविध, कृति रंग-बिरंग ।

973. काज नीक, पदसँ नहि ऊँच
निम्न जन्मसँ काजहि ऊँच ।

974. कीर्ति कुटिल नहि इरखा थोड़
ई नहि चाहथि सौतिन जोड़ ।

975. अजगुत कीर्ति
करथि नरश्रेष्ठ ।

976. नीच हृदय नहि कनियो मान
कतबो केओ पुरुष महान ।

977. धन-गुण-सम्पति मनसँ नीच
अधिक अहांग एहन केर थीक ।

978. अपन प्रशंसारत नर हीन
श्रेष्ठ विनयकर पुरुष प्रवीण ।

979. महत् कतहु उधिआयत बाहर
नीच रहय बस गौरवे आन्हर ।

980. सुपुरुष झाँपय दोसरक दोष
नीच बजाबय सबतरि ढोल ।

99. चरित्र

981. अनायास सब गुण टा थीक
सात्विक जीवन स्वच्छ चरित्र ।

982. सुदुक चरित्रक मानथि मोल
आर किछो नहि बुधजन बोल ।

983. पाँच खाम्हक सहयोग थिक विलक्षणता
दान, दया, प्रीति, शील आ सत्यता ।

984. तपस्याक मूल अहिंसाक निरबाह
गुणक मूल परनिन्दासँ परहेज ।

985. शत्रुक विरुद्ध बुद्धिमानक अस्त्र
सफलताक मूल थिक हयब विनम्र ।

986. चूकके ँ स्वीकारब छोटहुसँ
थीक गुणक कसौटी ।

987. सद्‌गुणक एहन कोन प्रकार
जे दुष्टक नहि करय उपकार ?

988. निर्धनता नहि कोनो गारि
राखी अपन चरित्र सम्हारि ।

989. गर्जन करय कतबो सागर
किनेर थिका गुणक आगर ।

990. पिरथी कदपि उठाओत भार
भले श्रेष्ठ बिनु शील स्वभाव ।

100. सौजन्य

991. सबसँ दर्शन सबसँ भेट
थिकै शिष्टता विपुल विवेक ।

992. दया आ सदाचारक योग
थिक शिष्टाचार ।

993. देह-दशा नहि बढ़बय मेल
विपुल उपहार प्रेम केर देन ।

994. उचित न्याय आ चरित उदार
विनयशीलता ताकय संसार ।

995. दुखद उपहास भलहि हो व्यंग्य
शिष्ट सदाशय रिपुहुक संग ।

996. गुनिजनक भरेँ चलय संसार
नहि तँ धूरि, नष्ट बेकार ।

997. बुद्धि भने हो रेतिक धार
वृक्षक भाँति अशिष्टक व्यवहार ।

998. शत्रुओक संग अशिष्टता
थिक हीन व्यवहार ।

999. ठाढ़े दुपहरि निविड़ अन्हार
हास-विहीन पुरुष केर भाग ।

1000. थिकै अशिष्टक धनहु अशेष
दूध गन्हायल घैल अपैत ।

101. कृपणक सम्पत्ति

1001. किरपिन बूझी जीवन हीन
सुख सम्पति बिनु भोगक दीन ।

1002. धन-सम्पतिकेँ बूझथि मूल
किरपिन आन्हर बूझि असूर ।

1003. संचय करथि यशक नहि सोच
पिरथिक भार एहन थिक लोक ।

1004. हित नहि मीत ने ककरो प्रीति
सोचथु बँचत की जीवन बीति ?

1005. देथि ने खरचथि नर अति दीन
भले लक्षपति अधिक धनीक ।

1006. देल दान नहि सहय अभाव
भोगल नहि धन थिक अभिशाप ।

1007. संचित व्यर्थ धनक नहि दान
सुनरि कुमारिक जीवन समान ।

1008. वैभव विपुल केओ नहि प्रीति
लुबुधल फल विषवृक्षे थीक ।

1009. शील, प्रीति नहि देहक सुख
धन संचयसँ अनके सुख ।

1010. गुणीक दुख नहि रहय सदाय
बरखा आबय रौद ओराय ।

102. भद्रता

1011. नारि स्वभावे लज्जाशील
असल लाज थिक करतब हीन ।

1012. भोजन वस्त्र निन्न थिक आम
गुण विशेष थिक शील स्वभाव ।

1013. जीवनकेँ चाही शरीर
विशिष्टताकेँ शील ।

1014. रत्न भद्रता पुरुष विराट
शील बिना मिथ्या अभिशाप ।

1015. जग बूझय शील केर खान
दोसरक लाज अपन जे जान ।

1016. शील भद्रता नहि व्यवहार
श्रेष्ठ जनहु नहि जग स्वीकार ।

1017. भद्रपुरुष केर प्राणहु जाय
प्राण बचा नहि शील गमाय ।

1018. शील हानि जँ नहि करी परहेज
अनकर बरजल करनी लेल ।

1019. करी कुकर्म गमाबी जाति
लाज उठाबी किछु नहि बाँचि ।

1020. जीवन पुतरिक सूतक तंत्र
बिना शील नर थिक परतंत्र ।

103. समाज सेवा

1021. अपन समाजक उन्नतिक ध्यान
तत्पर सतत थिक कीर्ति महान ।

1022. निष्ठा अथक, बुद्धि केर योग
उन्नति सभक हित दू संयोग ।

1023. फाँड़ बान्हि कय भाग्यो धाबय
समाज-सेवा जे चित्त लगाबय ।

1024. सिद्धिओ आबय तकरे द्वारि
लोकसेवा हित श्रमिक लगारि ।

1025. सेवा सबहक ध्यान लगाबय
सर-समाज सब दौगल आबय ।

1026. अपन समाजक सेवा भार
थिकै असलमे ई पुरुषार्थ ।

1027. रण हो वा दसगर्दा काज
स्वस्थ सचढ़ उठाबथि भार ।

1028. टारी आ ने मने मलीन
दसगर्दा केर समय न दीन ।

1029. थिकनि देह नहि दुःखक पात्र
सदति उठाबथि कुटुमक भार ।

1030. आबय विपति नाश केर भोग
जँ भलमानुसक नहि सहयोग ।

104. कृषि

1031. जाँचि चाकरी आ व्यापार
कठिन कृषि उत्तम व्यवहार ।

1032. पिरथिक धूरी पहियाक कील
कृषक भार उठबथि नित दीन ।

1033. उपजा करथि असल से भोग
आर सबहि दानक उपयोग ।

1034. अन्नक बाढ़ि आ सुखी किसान
नृप केर छत्र बढ़य वरदान ।

1035. उपजाबथि जे भोगथि उपजा
माङथि ने याचकक अभेला ।

1036. हाथ जोड़ि जोतक बैसाड़ी
अन्न अभाव तपहु हो भारी ।

1037. जोती माटि सुखाबी खूब
भले खाद नहि उपजा पूर ।

1038. पूरा ढाकी जोती थोड़
कमा, पानिसँ ताकुत जोर ।

1039. कृषक बैसाड़ थोड़हि हो तोष
निन्न घरवारिक हर्षहु थोड़ ।

1040. हँसय उर्वरा अवनी सूनि
बैसल झखथि केहन हम दीन !

105. निर्धनता

1041. निर्धनता तँ थिक बेजोड़
निर्धनता केर निर्धनते जोड़ ।

1042. करय असम्भव दरिद्रा दुष्ट
स्वर्ग, मोक्ष ने धरतिक सुख ।

1043. मधुर बोल आ गौरवक प्राण
हरय दरिद्रा भूखक सन्तान ।

1044. गहय दरिद्रा भले कुलीन
हकन हतास बनाबय दीन ।

1045. दरिद्रा अपने अभाग
नोतय अनेको संताप ।

1046. कतबो ज्ञानी गरिबक बोल
किछुओ धरि नहि होअय मोल ।

1047. दरिद्राक मारल भेला
माइओ करनि अभेला ।

1048. भूख आइओ लेत फेर जान ?
जे काल्हिए हरने छल प्राण !

1049. लागल आगि पड़ी भल नीन
आँखि ने मूनय बेगरता दीन ।

1050. विपन्न जँ नहि करय कायाक त्याग
पड़ोसियाकेँ होइन नोनहु–रोटीक अभाव ।

106. भिक्षाटन

1051. करी याचना जे छथि योग्य
दान देथि नहि हुनके दोष ।

1052. मन ने मलिन आ इच्छित दान
भिक्षाटनहुसँ आनन्दक भान ।

1053. याचनामे सेहो होइछ गरिमा
दाताक होइ सत्य आ गुणक महिमा ।

1054. सुखद थिक भिक्षा आ दान
दाता जँ नहि होथि झमान ।

1055. नहि ककरहु जँ करथि निराश
याचक भिक्षुक राखथि आश ।

1056. अस्वीकारक नहि हो रोग
तँ भिक्षाटन नहि थिक दोष ।

1057 हर्षित हृदय परम आनन्द
घृणा लेश नहि दानीक मन ।

1058. जग सुदुक कठपुतरिक मंच
जँ दानक परिपाटी भंग ।

1059. भिक्षुक याचक आ नहि दान
दानवीरकेँ कोना मान ?

1060. भिक्षुक करथि न कनियो रोष
अभाव चंचल सम्पत्तिक दोष ।

107. भिक्षाटनक अभिशाप

1061. लाख गुण नीक नहि माङी भीख
प्रियजनो जँ तत्पर देबऽ ले' किछु ।

1062. ईश्वर भिक्षुक होअथु नाश
ककरहु जँ होइ भीखक आस ।

1063. भीखे करत दरिद्रा नाश
मिथ्या राखब एहन आस ।

1064. हुनके थिक एहि पिरथिक राज
भले दरिद्र भीख नहि भाख ।

1065. माँड़हु होइछ अतिशय मीठ
बाहुबलेँ जँ कमायल थीक ।

1066. गाइयो ले' माङी नहि पानि
जीह ले' एहिसँ पैघ नहि ग्लानि ।

1067. करी नेहोरा, जँ माङू भीख
माङू अबस, नहि कंजूसक दीस ।

1068. भीख थिक ठक्क, नाओ
डूबत अस्वीकारक चट्टानक ठाओँ ।

1069. हिरदय फाटय जीयब माङि
मरण मान हिय सुनि कय नाहि ।

1070. शब्द जे याचककेँ दैछ मारि
करैछ ओकरा की जे दैछ नकारि ?

108. नीच

1071. देखबामे मनुक्खक रूप
नीच-सन आओर नहि बहुरूप ।

1072. नीक-बेजायक कोनो नहि बोध
भागेँ भलमानुससँ नहि थोड़ ।

1073. फुरल कयल ने कोनो विचार
नीच ईश-सन नित व्यवहार !

1074. शठकेँ होइछ हर्ष केर भान
नीच अधम सङ जखन मिलान ।

1075. भय गुण थिक बुझी ई ठीक
कौखन लोभ करइए नीच ।

1076. नीच होइछ फूटल ढोल
पचइ गप्प नहि, कर अनघोल ।

1077. कदपि दान नहि हाथहुक मैल
मारिक भयसँ भल किछु देल ।

1078. बुझा कही तँ बूझथि भल
पेरी शठ कुसियारक रस ।

1079. सफल लोकसँ लागल धाह
दुर्जन गढ़थि बहुत अपवाद ।

1080. आबय आफद काजक कोन ?
दुष्ट निकालथि अप्पन मोल ।

तृतीय खण्ड : काम

I. गन्धर्व-प्रेम

109. सम्मोहन

1081. सौम्य मयूरि वा अपरुप नारि
थिकी, भगवती ? हिरदय हारि ।
1082. परस नयन भेल सुन्नरि नारि
विपुल सैन्य, हत, मनहि विचारि ।
1083. नयनक बाण सुन्नरिक रूप
यम देखल हम नयन स्वरूप ।
1084. सरल सुखद सुन्नरिक रूप
घातक नयन कते प्रतिकूल ।
1085. हरिणी, नयन, यमक ई मारि ?
देखल सुन्नरि तीनु विचारि ।
1086. भृकुटी सोझ करइत अवरोध
मिलइत आँखि फटइत नहि मोर ।
1087. उमक उरोज पाट परिधान
उन्मत गजक आँखि बरु झाँप ।
1088. अद्भुत शौर्य रिपुक संताप
नष्ट भेनहुँ क्षण भृकुटिक चाप ।
1089. हरिणी नयन शीले परिधान
कामिनि किए करथु शृंगार ?
1090. पुनि-पुनि चाख मधुक नहि तोष
नयनहिँ प्रेम विपुल संतोष ।

110. संकेत

1091. कामिनि नयन द्विगुण कर मारि
क्षणहि मारि पुनि लेथि सम्हारि ।

1092. कामिनि देखलि नयन कनडेरि
प्रणय परस किछुए सन्देह ।

1093. सजल नयन झुकाओलि नारि
प्रीतिक लता पटाओल वारि ।

1094. परस नयन नहि, देखी आँखि
नहि देखी देखथि मुसुकाथि ।

1095. परस नयन नहि सुस्मित हास
मुकुलित नयन संकेतक भास ।

1096. बाजथि किछुओ हियक नहि रोष
पलहु खसय थिक स्वीकृति बोध ।

1097. वाणी रुच्छ बुझी नहि सत्य
सत्य दूर बसु नहि परतच्छ ।

1098. हमर निहोरा हुनकर नैन
करुणा बरिसय भाखय चैन ।

1099. परिचयहीन हुनक ई भाव
प्रिया-प्रियक थिक सहज स्वभाव ।

1100. कहब सुनथि, देथि भल कान ?
नयन मिलय तँ हृदय मिलान ।

111. आलिंगनक संतोष

1101. अपनहिँ रतनि अपरुप संयोग
संज्ञा सकल भोगय संतोष ।

1102. वैरी रोग विविध उपचार
रोगहु रतनि स्वयं उपचार ।

1103. पंकजनयन स्वर्ग केर भान ?
तुष्टि मृदुल प्रिया केर कान्ह ।

1104. थिकै कोन आगिक ई स्रोत
दाह दूरसँ नियरहि तोष ।

1105. फूलहिँ सजल प्रिया केर रूप
होय परस सुखद अपरूप ।

1106. अमृत भोग कान्ह अवलम्ब
वारिद बुन्न जखन अवसन्न ।

1107. बाँहिक बलय बसथि सुख भोग
गिरहत जकाँ एखनहि संतोष ।

1108. भरी स्वास नहि आबय माँझ
नियर परस मधुरे मधु भास ।

1109. मान-अभिमान पुनः हो मेल
प्रणय फलक संतोषे भेल ।

1110. धनिक परस भेल ई भान
पोथी प्रणय निरंतर ज्ञान ।

112. संगिनीक प्रशस्ति

1111. सबसँ तन्नुक अनिचम[1] फूल
तैसँ मृदुल प्रिया समतूल ।
1112. हिरदय हमर केहन तोँ मूढ़
फूल प्रिया केर नयनक तूल ?
1113. हास प्रबाल नयन हो बाण
बाँहि बाँसवत् काय सुवास ।
1114. सजल कुमुदिनी देखल आँखि
फूल न कदपि प्रिया केर भाँति ।
1115. फूल पात आ वृन्तक भार
मंजु नितम्ब ने करय सम्हार ।
1116. विस्मित तारा हेरथि चान
दोसर भूपर एक समान ।
1117. चंचल कलुष शशिक छवि दाग
स्वच्छ सौम्य आनन धनि भाग ।
1118. चान चमक तोँ धनि केर भाँति
करब प्रीति हम तोहरो राति ।
1119. धनि केर परतर जँ अभिलाष
चान करह किछु अजगुत बात ।
1120. हंसक पाँखि कुसुम केर फूल
कठिन कठोर प्रिया पद शूल ।

---

1. अनिचम ओ काल्पनिक फूल थिक जे सुघिंतहि मौला जाइछ ।

113. प्रियक प्रशस्ति

नायकक उक्ति

1121. दाँत-पाँति आ कोमल ठोर
दूध मधुक सहज संजोग ।
1122. जीव शरीरक जीवन गेँठ
तेहने हमर प्रिया संग नेह ।
1123. आँखिक मुरति निकसि बहराय
धनि आ नयन एक भऽ जाय ।
1124. मिलय देह से जीवन सार
विरह स्वत: जीवक अविघात ।
1125. हुनक नयन नहि सुमिरल जाय
सुमिरन करी बिसरि जँ जाइ !

नायिकाक उक्ति

1126. आँखियो मुनि हम देखी प्रीति
दोसरक हेतु ओ रहथु अतीत ।
1127. आँखि करब नहि काजर रेख
प्रियतम नयन बसथि नित देखि ।
1128. तपत तरल नहि पीबी जानि
अंतर प्रीति कदपि नहि हानि ।
1129. आँखि मूनि नहि सूती नीन
भेला परोच्छ भेलहुँ हियहीन ।
1130. नित दिन हृदय करथि ओ राज
निर्मम, तजल, कह सकल समाज ।

114. दृढ़ निःसंकोच

नायकक उक्ति

1131. चाखल रति बिछुड़न भेल भार
सभक निहोरा मडल[1] सवार ।
1132. काया हृदय सही नहि भार
लाज छोड़ि होइ मडल सवार ।
1133. बहुत लाज छल आ पुरुषार्थ
आब मनोरथ मडल सवार ।
1134. लाजक बेड़ा पुरुषक मान
प्रेमक ज्वारि करत सम्मान ?
1135. रातुक विरह मडल केर ज्ञान
कंगन पहिरने कामिनिक दान ।
1136. मध्यराति आ निविड़ अन्हार
निन-विहीन होइ मडल सवार ।
1137. विरहक आगि दाहय भल शोक
भाग नारि केर मडल नहि सोच ।

नायिकाक उक्ति

1138. निर्दय प्रीति कदपि नहि भीत
सकल गुप्तकेँ कयल प्रतीत
1139. कहय प्रीति 'बूझय नहि' गोप
कुसुमित सबतरि ज्ञापित लोक
1140. सहल पीड़ नहि हमर जे भोग
अमरुख हँस भागक दुर्योग

1. 'मडल' ताड़क पातक बनाओल सांकेतिक घोड़ा थिकैक । मडलपर चढ़ि आकुल प्रेमी सहानुभूतिक कामनासँ नगर भरिमे आक्रोश करैत अपन गुप्त प्रेमकेँ प्रकट करैत छलाह ।

115. गोलंजर

नायकक उक्ति

1141. उड़य गोलंजर जागय आस
गाल बजाबथि, नहि विश्वास ।
1142. धन जे लोक उठाओल आगि
सफल मनोरथ प्रियकेँ पाबि ।
1143. कयल सफल सोचहुसँ दूर
स्वागत अबस पसारथि झूठ ।
1144. बिकसल प्रेम बयारहिँ पाबि
बिनु अपवाद कुंठित की जानि !
1145. छाकहि छाक मदक परितोष
गप्पहि गप्प प्रीतिक उद्योग ।

नायिकाक उक्ति

1146. कतबो अल्प ग्रहण सब देख
मिलन दिवस एक परगट भेल ।
1147. गप्प-गोलंजर प्रीतिक खाद
मायक रोष पटाबय पाँत ।
1148. कय अपवाद प्रीतिक प्रतिरोध
घिउ ढारि कय आगि निरोध !
1149. 'कदपि ने छोड़ब' कहि जे गेल
डरब कोन विधि ? अपयश भेल ।
1150. नगर-अपवाद भेल अनुकूल
कयलनि प्रीति करथु सब पूर ।

II दाम्पत्य प्रेम

116. विरह

1151. जँ नहि जायब सुनी बुझाउ
घुरि आयब से जिबथि सुनाउ ।
1152. अओता कंत मनहि आह्लाद
विरहक सुधिएँ मिलनहु अवसाद ।
1153. कोना पतियायब, बुझथि आ जाथि
हिरदय फाटय तदपि चल जाथि ।
1154. भय जुनि करी, कहल आ गेल
कयल भरोस चूक ई भेल ।
1155. प्राण बँचय, जँ बरजी जाय
मुँह देखता नहि घुरियो आबि ।
1156. हृदय कठोर प्रणय नहि आस
दूर जाथि, पुनि अओता पास ?
1157. ससरय बलय कातर हम हीन
गेला दूर देह भेल क्षीण ।
1158. प्रियतम दूर बसथि अति शोक
परिचयहीन जीवन भेल मोर ।
1159. प्रीति विषम परस बिनु दाह
आगि नियर हो तँ संताप ।
1160. प्रेयसि एहन थिकी अपरूप
विरह सहथि जीबथि अजगूत ।

117. विरह-वेदना

1161. स-हरष रोग नुकायब जानि
बस नहि प्रीति ई निर्झर पानि ।

1162. प्रीति नुकायब अति विपरीत
कहब कोना, पिय कयलनि प्रीति ।

1163. प्रीति लाज आ माझहिँ प्राण
देह सहय नहि दुनूक भार ।

1164. विषम प्रीति सागर विकराल
नाओ ने द्वारा उतरी पार ।

1165. प्रीति एहन जँ दुख दय गेल
कहू वैर की नहि कय देत ?

1166. अनुपम प्रीति सिन्धु सुखसार
पीड़ा विषम हियक अविघात ।

1167. भँवर प्रीति सूझय नहि ओर
विकट अन्हार एसगरि हिय मोर ।

1168. जगत सुता राति निज दीन
एसगरि हम रातुक सङ हीन ।

1169. निर्मम राति पियहुसँ क्रूर
विषम राति जँ पिय बसु दूर ।

1170. नयन हियक सङ प्रिय सङ जाइत
नयन नीर नहि बाढ़ि समाइत ।

118. देखबाक उद्वेग

1171. रोग ककर ई ? नयनक दोष
दोष हमर ? नहि सक सहयोग ।

1172. पहिने सोच ने, भरलह पोख
नयन आब की कय अपसोच ?

1173. लागल हँसी आँखि नहि धीर
पहिने मातल आब बहु नीर ।

1174. रोग देलह ने जकर उपाय
कानि विरहमे नोर सुखाय ।

1175. सागर अगम प्रीति, नहि थाह
राति पहाड़, नीन नहि भाग ।

1176. विरह देलक जे सहय अभाग
हरख, यैह छह तोहरो भाग ।

1177. नोर बहाबह बहिते जाह
सहज लोभमे नयन बताह ।

1178. मुखमे प्रीति हियक नहि मीत
भले नियर बसु, देखनहि नीक ।

1179. नयन चैन नहि नियर वा दूर
निन आँखिन नहि कखनो पूर ।

1180. जगत प्रतीत हियक सब राज
दोष नयन केर प्रकट समाज ।

119. पीतिमा

1181. जाथु दूर से कहलहुँ नाथ
पीयर गात हमर अपराध ।

1182. पांडु वरन करय अभिमान
कयलनि प्रीति हुनक थिक दान ।

1183. हरल रूप आ हरलनि लाज
बदलहिँ रोग पियर भेल गात ।

1184. मनपर राज बोल धरि लेल
गात कोन विधि पीयर भेल ?

1185. वरणहीन आ पीयर देह
हमरे भाग जाथि जँ नेह ।

1186. दीप मिझाय अन्हारक राज
छूटल परस पियर भेल गात ।

1187. लपटइत कने घूरि की लेल
पीत शरीर तखनिएँ भेल ।

1188. भाखय सबहिँ पियर छथि भेलि
कहय केओ नहि पिया चल गेल ।

1189. दोख देअह जुनि हम छी पीत
रहथु सुखी सखि हम्मर मीत ।

1190. सहथु नाथ नहि जँ अपवाद
पीत वरण नहि किछु अवसाद ।

120. एकान्त दुश्चिन्ता

1191. अपन मनक जँ पाबथि प्रीति
बीजविहीन फल मधु अनुभूति ।

1192. समय पाबि पिरथीपर वारि
प्रिया-प्रियक प्रीतिक उपहार ।

1193. जीवन जियब हुनक अभिमान
पिय केर प्रीति असल वरदान ।

1194. प्रीति करी आ पाबी प्रीति
असल भाग, नहि तँ विपरीत ।

1195. प्रीति कयल नहि पाओल प्रीति
कहबै एहनुक केहन प्रीति ?

1196. एक विमुख आ दोसर प्रीत
कटु थिक, मधु जँ दुहूक प्रीति ।

1197. हमर विरह आ पीयर गात
मनमे मन्मथ करथु निवास ।

1198. प्रेमक शब्द सुनल नहि कान
पाथर हिय थिक वज्र समान ।

1199. अपने हीन सुनल मधु कान
प्रियतमा केर गुणक बखान ।

1200. हृदयहीन जुनि करह बखान
सागर दुखक थिकै अनुराग ।

121. मधुर स्मृति

1201. प्रीति मधुर मदिरासँ मीठ
सुदुक सुमरि मादक अनुभूति ।

1202. उत्कट प्रीति अपूर्वे मीठ
सुमरि मीत विरह नहि पीड़ ।

1203. सरकत मनहि, सरकल नहि गेल
कन्त ने सुमिरल, ने सुधि लेल ।

1204. बसी हिया पिहु ? हम नहि जानि
बसथि हृदय ओ हमर मन माहि ।

1205. लाज ने छूबनि बैसथि आबि
अपन हृदयसँ बाहर राखि ।

1206. कोन उपाय सुमरि हम कन्त
रही हुनक हम अहिना संग ।

1207. हृदय दग्ध सुमरी हम पीय
बिसरी उपाय करी की दीन ?

1208. कतबो सुमरि हुनक नहि राग
थिकै कहू नहि नीक स्वभाव ।

1209. दूटा देह हृदय छल एक
सोचि विमुख ओ प्राणक शेष ।

1210. बसथि हिया आ गेला विदेश
चमकि चान करह दृग एक ।

122. मधुर स्वप्न

1211. पाहुन सपन अनलक सन्देश
कहू कोन विध सपनक आवेश ?

1212. नीन होय तँ कही बुझाय
विशद ह्रदय केर पहुक सुनाय ।

1213. सपन देखि हम जीवन पाबि
भलहि उपहास खूजल जँ आँखि ।

1214. सपना प्रीति लागल मन मोर
गेला छोड़ि आनय चितचोर ।

1215. बड़ सुखसार हुनक संग मेल
आब सपनमे अतिशय भेल ।

1216. आबथि सपन छोड़थि नहि संग
सुदुक तखन जँ अपने भंग ।

1217. एहन कठोर किए कर पीड़
जागी जखन एसगर बसि नीड़ ।

1218. सूती नीन कान्हहि कर राज
जागी जखनहुँ ह्रदय विराज ।

1219. आबथि स्वप्न देखय नहि कोइ
कहय तजल मोहि ई निर्मोहि ।

1220. तजलनि गेला बुझय नहि आन
हमर सपन नहि अनबुझ अनुमान ।

123. साँझुक विरह

1221. दी आशीष साँझ, नहि साँझ
थिकह असल विरहिणीक त्रास ।

1222. धूमिल साँझ साँझ निसोख
तोहरो प्रीति छह एहने कठोर ?

1223. दिन अनेक भीत आ पीत
आजुक साँझ मारुक विपरीत ।

1224. प्रीत दूर जँ साँझुक हाल
घातक शत्रु साँझक पदचाप ।

1225. कोन उपकार कयल हम भोर ?
केहन अपराध साँझक हित मोर ?

1226. छला कन्त जखन एतय मम पास
बूझल कहाँ साँझक ई राग ?

1227. भोरे उठय विकसय भरि दिन
विरह बढ़य साँझहि अनुदिन ।

1228. भेड़िहर तान बजाबइ मीठ
साँझकेँ सोर करैते बिद्ध ।

1229. बाढ़य विरह सूझय नहि बाट
गाढ़य साँझ करय अविघात ।

1230. धनक लोभ टा बूझथि नाथ
धूमिल साँझ हरत प्रिय प्राण ।

124. देहहीन

सखीक उक्ति

1231. सोचइत तजल बिसरि जे देल
नयन कुसुम कुम्हलाइत गेल ।
1232. नोरेँ भरल ज्योतिसँ हीन
क्रूर नाथ तुअ, कहय बहीन ।
1233. पाणिग्रहणक उन्नत ओ कान्ह
बिछुड़न-विरहहिँ भेले म्लान ।
1234. गेल नाथ काया भेल क्षीण
रूसल सुषमा बलया हीन ।
1235. बलया खसय देह भेल क्षीण
निर्मम पिया भाखय नितदीन ।

नायिकाक उक्ति

1236. बलया खसओ गलओ मोर गात
सुनब कदपि नहि हुनक अपवाद ।
1237. गरिमा केहन कहह जाय कान
हिया हमर हम विरहेँ म्लान ।

नायकक उक्ति

1238. बलया परस कने भेल ढील
भामिनि सुन्नरि मुखहु मलीन ।
1239. नयन विशाल अश्रुसँ पूर
श्वासक अंतर माँझहि दूर ।
1240. आँखिक चमक किए भेल दूर
पीत ललाटक कारण झूर ?

125. मनकथा

1241. हृदय हमर नहि कह उपचार ?
रोग असाध हमर अवसाद ।

1242. जीवह हृदय उचित नहि राग ?
करथि प्रेम नहि विरह अपराध ?

1243. हिया हमर विरहक की लाभ
देल रोग नहि हिरदय पास ।

1244. जाह हिया नयनहु लय संग
रहत संग तँ नाशत अंग ।

1245. कहह हृदय तजबह तोँ पीय
करथि प्रेम नहि कतबो प्रीति ।

1246. मिथ्या राग हिया तोँ नारि
होइत पिया सङ जयबह हारि ।

1247. हिरदय प्रिया छोड़ह तोँ एक
प्रेम लाज दूइ नहि सह देह ।

1248. हिया तोहेँ थिकह अति मूढ़
'करथि दया नहि' छथि ओ क्रूर ।

1249. जोहइत हृदय कतय तोँ जाह
हृदय माहि ओ करथि निवास ।

1250. तजल गेला राखी हिय जानि
अपनहु मन अवसादहि माँहि ।

126. नारिसुलभ गंभीरता

1251. तोड़ि कपाट खोलय जे गोप
प्रेम कुठार विदित कर लोक ।

1252. निर्दय प्रीति निशा धरि घात
अपनो मातु हिया अवघात ।

1253. प्रीति छिपाबी हियमे झाँपि
छीक जकाँ नियंत्रण नाहि ।

1254. सकमे प्रेम एहन मन सोच
तोड़ि बान्ह सब प्रीतिक जोर ।

1255. पंछी-प्रेम आदर ने भाव
निर्मोहीकें स्वत: अभाव ।

1256. अजगुत कतेक हमर अछि पीड़
निर्मोही सङ जोड़ल प्रीति ।

1257. लाज केहन बूझी हम जानि
करथि पिया जे अछि मन माहि ?

1258. नारि सुलभ लज्जा की भेल
लुबुधल क्षणमे छल केर बोल ।

1259. बरजब मोन छल केहन नेआर
लपटल पियकें हिय ने सम्हार ।

1260. ह्रदय कठोर वज्र विधि कोन
परस मात्र जँ पिघलय मोन ?

127. परस्पर स्मरण

नायिकाक उक्ति

1261. शेष ज्योति नहि नयन न देख
दिन-दिन गनइत आङुर क्लेश ।
1262. भूषण वदन बिसरि जँ पीय
सुषमा शक्ति सदा विपरीत ।
1263. शौर्य सखा विजयक संधान
हुनक प्रतीक्षा आबथि प्राण ।
1264. मन नाचय हिरदय उदगार
प्रणय परस आबथि हियहार ।
1265. खुजह आँखि किछु पियरी जाय
देखि पियाकेँ वदन लहराय ।
1266. परस एकदिन आबथि नाथ
सकल व्याधि गत हयब सनाथ ।
1267. कोन विध करब आयल पहु द्वारि
रहब ठाढ़ि, वा पयर बढ़ाबि ।

नायकक उक्ति

1268. रणमे रहथु विजयी नरनाथ
आइ राति प्रेयसि संग स्वादि ।
1269. ताकी बाट बटोहिक ध्यान
दिवस एक थिक सात समान ।
1270. फाटल हृदय प्राण चलि गेल
बलय बाँहि, सपना की देत ?

128. संकेत

नायकक उक्ति

1271. अबस छिपौने छी अँह, जानि
नयन संकेत दैत अछि भाखि ।

1272. काँच बाँस सन कान्हक नारि
नयन बसथि भीत सुकुमारि ।

1273. सुषमा हुनक निहित किछुएक
मणिमाला केर सूत्र विशेष ।

1274. मुसुकी मधुर नुकाबय भेद
काँचे कली सुगंधित भेल ।

1275. पहुँचा बलया आ किछु भाव
औषधि हमर आ हुनक स्वभाव ।

नायिकाक उक्ति

1276. अति अनुराग प्रणय आ प्रेम
खोलय कदाच विरह केर भेद ।

1277. हाथक कंगन देल आभास
होयब विकल हमरा नहि भास ।

1278. दिवस एक भेल गेला विदेस
पीयर वदन दिवस कत भेल ।

नायिकाक सखी नायकक प्रति

1279. काँच-बाँस तन बलया बाँहि
देखथि युग पद अरु किछु नाहि ।

1280. मूक नारि गुण उदात्त
नयन नेहोरा करय प्रकाश ।

129. मिलनक अभिलाष

1281. सोची मुदित देखि मन हर्ष
प्रणयक रीति मदक नहि अर्थ ।
1282. प्रेम विराट ताल फल रूप
मड़ुओ सन बेमन विपरीत ।
1283. करथु नहि मान धरब नहि हिय
जाधरि हुनक नयन नहि मील ।
1284. सखी कहू की गेलहुँ अति राग
देखिते बिसरि कंठ अनुराग ।
1285. नयन देख नहि काजर तूलि
जखन नियर बसि हुनकर भूल ।
1286. देखी जखन देखी नहि चूक
दूर बसथि तँ चूकहि चूक ।
1287. उफनइत धार कुदी थिक चूक
मिथ्या राग कनिएँ नहि भूल ।
1288. वक्ष उरोज करय अपराध
मधुक मधुर रस वत अपवाद ।
1289. प्रणय परस अति कोमल फूल
अनुपम गुण किछुए अनुकूल ।
1290. हुनक विरोध नयनसँ भास
बन्हन दृढ़तर तेहन आभास ।

130. अपन प्रति रोष

1291. हृदय देखह हिय हुनकर आप्त
हमर थिकह, नहि हमरे पास ?

1292. हुनक प्रेम नहि, बुझियो हिय
दौड़-धूप किए हुनके दीस ।

1293. दौड़ि जाइत तोँ पिय के पास
निहत प्रेम बुझि आ नहिए आस ?

1294. के बिसबास करत हिय मोर
दौड़ि, थम्हह नहि किछुओ देर ।

1295. भय केर मारि सही सब काल
पाबि ने पायब, पाबि गमायब हुनकर साथ ।

1296. हमर हिया जँ हमरे पास
प्राण लेत ई निश्चय बात ।

1297. ने हम बिसरी अपने लाज
हिरदय मूढ़ ने हुनकर आस ।

1298. नेहेँ हिया कय हुनकर सोच
मान उचित नहि, जुनि करु अवरोध ।

1299. हृदय सुहृद् जँ नहि मन हानि
आर ककर हम सखिए मानि ?

1300. अपने हृदय भेल अछि आन
कहब कोना हम अनका कान ?

131. नारि सुलभ संकोच

नायिकाक सखी

1301. हारि कदपि नहि देखह उद्वेग
मान करह देखी की भेल ।

नायिकाक उक्ति सखीक प्रति

1302. लवण थिकै कनिए जँ मान
देने अधिक बिगाड़य स्वाद ।

नायिकाक उक्ति नायकक प्रति

1303. उचित तजब नहि कयलहुँ मान
एक अवसाद तैपर अपमान ।

1304. मान कयल बिसरि जँ देल
मुरुझल लता समूले गेल ।

नायक अपना प्रति

1305. किछु संकोच उचित सुकुमारि
सुपुरुष हेतु गुणे बरु जानि ।

1306. नहि संकोच कनेको रोष
प्रणय काँच वा उतरल भोग ।

1307. मान-अभिमान देअय परिताप
सहब कते, प्रणयक विश्वास ?

1308. शोक केहन कनिओ नहि चारि
शोकाकुल छी हिरदय हारि ?

1309. अमरित मधुर छाहरि केर पानि
मान मधुर, बूझय जे बानि ।

1310. प्रणय वेदना विरहक मारि
हुनक संकोच ने मिलबय आनि ।

132. प्रिया-प्रेमीक उतराचौरी

नायिका

1311. पारगामी तुअ, परसब नहि देह
नारि जातिसँ तोहर सिनेह ।
1312. कयल मान छीकि ओ देल
देब आशीष, बिसरि जँ गेल ।

नायक

1313. पुष्पहार आ हुनकर राग
करथि ककर हेतुएँ शृंगार ?
1314. कही 'प्रितयमा', पूछथि आबि
आओर एकटा सुन्नरि प्यारि ?
1315. जनम एहि नहि बिछुड़ी भाख
नयन नीर बह प्रिया संताप ।
1316. 'सुमिरन कयल' जखन हम भाख
'बिसरि गेल की' ? पाछू भागि ।
1317. 'सतंजीव', छीकी कहि देथि
छली नारि के ? सुमिरन भेल ।
1318. रोकी छीक तँ पूछथि आबि
सुमिरन ककर जे छीकल दाबि ?
1319. जाय मनाबी जखनहु भास
कहथि, कयल नहि विपुल अभ्यास ?
1320. मूक निहारी, पूछथि नारि
ककर सोचमे मनहि विचारि ?

133. बिछुड़नक आनन्द

नायिका

1321. हुनक दोष नहि, किछु संकोच
दृढ़ कय बान्हत मनहि अछि सोच ।

1322. मान-अभिमान कार्य नहि दूर
प्रेम सबल बाढ़य भरपूर ।

1323. मान-अभिमान सरग बढ़ि नेह
मिलय पानि पिरथी आ मेघ ।

1324. हुनक लाज संग अस्त्र विशेष
हमर अभिमान करय नि:शेष ।

नायक

1325. नहिओ दोष किछु हरख बिछोह
छूटय परस तखनो संतोष ।

1326. हरख पाछुओ सुभोजन तोष
प्रीति मधुर सुमिरन संतोष ।

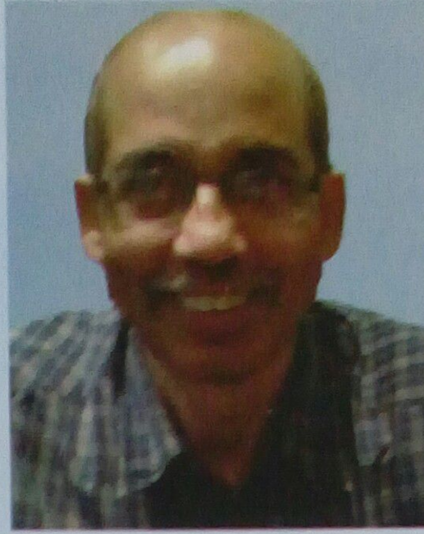
1327. प्रेमी-प्रिया मान-अभिमान
हारल जीतय कर प्रकट मिलान ।

1328. मिथ्या मान देलक जे स्वाद
बुझक कदपि, छल स्वेद ललाट ।

1329. मान करह, करह तोँ मान
रतनि होअय ने राति बिहान !

1330. रसक बाढ़ि बढ़य जत मान
मोदक मोद पुनि हृदय मिलान ।





डा. कीर्तिनाथ झा

कर्नल, सेना चिकित्सा सेवा कोर (सेवानिवृत्त)

जन्म	:	08 सितम्बर 1955 गाम-अवाम, पो.- रतौल, भाया-झंझारपुर रेलवे स्टेशन, जिला- दरभंगा (बिहार) पिन-847403
पिता	:	स्व. तारानाथ झा
माता	:	स्व. विन्देश्वरी देवी
शिक्षा	:	एम.बी.बी.एस. (आनर्स), एम.एस. (नेत्र चिकित्सा)
वर्तमान पता	:	प्रोफेसर, नेत्र-चिकित्सा विभाग महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च इस्टिच्यूट पिलैयारकुप्पम, पांडिचेरी- 607 402
सम्पर्क	:	0413-2615568 (आवास)
मोबाइल	:	9443655640
Email	:	kirtinath.jha@gmail.com
कृति	:	**जड़ि (कवितासंग्रह)** - 2001 ई. **'किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प' (कथासंग्रह)** - 2005 ई. **टूटल पाँखि (खलील जिब्रानक अरबी उपन्यासक मैथिली अनुवाद**), 2016 ई.
रुचि	:	पढ़ब-पढ़ायब, रोगीक चिकित्सा, लेखन आ देश-विदेश भ्रमण

तिरुवल्लुवरक अमर कीर्ति 'कुरल'क मैथिली अनुवाद

तिरुवल्लुवरक अमर कीर्ति 'कुरल' तमिल काव्यक चूड़ामणि आ विश्व साहित्यक अमूल्य निधि थिक । एहि ग्रन्थमे जीवनक प्रत्येक बिन्दुपर सूक्ति सब सिंगारहार फूलक पथारपर फूल-जकाँ छिड़ियायल भेटत । सूक्तिसबहक एहि पथारमे ज्ञानक विपुल भण्डार तँ छैके, ताहूसँ बेसी रुचिकर छैक बेजोड़ काव्यक अनुपम लालित्य आ कहबाक विरल शैली । यैह थिकैक कुरलक विशिष्टता, आ यैह थिकैक कुरल केर कालजयी लोकप्रियताक रहस्य । कुरलक भाषा जेहने कठिन छैक, भाव तेहने गूढ़ । तथापि, कथ्यक सार्वलौकिकताक कारण तमिल लोककंठमे ई ग्रन्थ आइओ अमर अछि । किन्तु, कुरल मिथिलामे एखनहुँ अपरिचित अछि । आशा अछि, ठेठ भाषा आ मुहावरा-लोकोक्ति एवं फकड़ाक शैलीमे कुरलक ई भावानुवाद एहि कमीकेँ पूर्ण करत आ एहि अमर ग्रन्थकेँ सहजहिँ मैथिल लोककंठमे बसा देत ।

ISBN

